

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -24

दिसम्बर - II - 2022



अंक - 18

माउण्ट आबू

Rs.-10

अद्वितीय ब्रह्मा, अनुपम ब्रह्मा, अनुकरणीय ब्रह्मा के नवशे कदम...

न समय को रोका जा सकता है, न परिवर्तन को। परिवर्तन के शाश्वत नियम से विधाता की सर्वोच्च कृति से संपूर्ण मानव भी अछूता नहीं रह सका। द्वापर युग आते-आते मानव आत्मा के गुणों रूपी गहनों में काम-क्रोध की मिलावट हो गई और वह अष्टमी के चंद्रमा की तरह आठ कला तक कालिमा भर गई। इस कालिमा ने सतयुगी दैवी संबंधों की भेंट में, स्त्री-पुरुष के आपसी सम्मानजनक संबंधों को भी कालिमा से रंग दिया। पुरुष ने शारीरिक बल के कारण प्रथम दर्जे का नागरिक होने का अहंकार पाल लिया और शारीरिक बल से हीन (मानसिक गुणों में पुरुषों से आगे होते हुए भी) नारी को, दूसरे दर्जे का नागरिक समझे जाने के भयंकर अभिशाप से ग्रस्त कर दिया गया। यहीं से प्रारंभ हुई उसके शोषण और उस पर ढाए जाने वाले अत्याचारों की अचर्चित कहानी।

नारी के प्रति हेय मान्यताएँ

‘भोग्या’, ‘पुरुष की दासी’, ‘पाँव की जूती’, ‘नारी की अक्ल उसके वाम पाँव की एड़ी में’, ‘नारी के लिए पति परमेश्वर, गुरु’ चाहे आहार, व्यवहार, विचार, आचार की दृष्टि से भ्रष्ट हो, ‘नारी को मार-पीट कर वश में रखना चाहिए’, ‘ढोल, गंवार, शुद्ध, पशु, नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी’, ‘नारी नर्क का द्वार’- धर्माचार्यों और समाज के ठेकेदारों द्वारा दी गई उपरोक्त मान्यताओं (वास्तव में कुमान्यताओं, असत्य मान्यताओं, अन्यायपूर्ण मान्यताओं) ने अत्याचारों और शोषण की इस आग में घी का काम किया।

इसमें संदेह नहीं कि समय-समय पर विरले समाज सुधारकों ने नारी की पीड़ा को समझ उसको सबल बनाने के पक्ष में आवाज उठाई परंतु उनका वह कार्य थोड़ा सिरें चढ़ने के बाद उनके जाते ही ठण्डे बस्ते में ढल गया।

नर-नारी को पवित्र बनाने की प्रभावशाली जागृति

हमें यहाँ यह कहते हुए कोई संकोच या झिझक नहीं है कि नारी को कामिनी के बजाय कल्याणी और अबला के बजाय शक्तिरूपा बनाने के दुष्कर कार्य को, समाज की कड़ी चुनौतियों का सामना करते हुए भी पिछले 85 वर्षों से सफलता के शिखर पर ले जाने में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय अथक रूप से प्रवृत्त है। इसके संस्थापक ने ‘नारी स्वर्ग का द्वार है’ और ‘वन्दे मातरम्’ का नारा करीब नौ दशक पूर्व लगाया जब किसी कोने में, कोई इस बारे में आवाज उठाने की हिम्मत ही नहीं करता था। आध्यात्मिक दृष्टिकोण रखने वाले सभी लोग मानते हैं कि शरीर तो प्रकृति का है, नाशवान है, पाँच तत्वों से बना चोला अथवा पुतला है। तब फिर इसके आधार पर क्या झगड़ा करना? समाज में तो दोनों ही प्रकार के चोलों की जरूरत है, विभिन्नता ही सृष्टि की शोभा है तब फिर स्त्री चोले की निन्दा क्यों? इस प्रकार के विचारों से सुसज्जित दादा लेखराज, जो प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना के निमित्त बने, कोलकत्ता के एक

पृथ्वी को थमाने के लिए क्या चाहिए? पवित्रता की शक्ति। उस पवित्रता को शिरोधार्य किया तो किया ब्रह्मा ने, उसकी प्रथम बात की तो की ब्रह्मा ने, निमित्त बनाया नारी को। समाज के मूल्यों को पुनर्निर्धारित करने का काम अगर किसी ने किया तो वो सृष्टि के प्रथम मानव ब्रह्मा ने किया। आधार उसे बनाया जिसे समाज ने दुतकारा, समाज के कुंठित मानसिकता वाले को भी बदल सभी को समाज परिवर्तन के कार्य में नारी को उठाने का बल भरा तो भरा ब्रह्मा ने। लाखों लाख परिवर्तन हुए, दिखे और भविष्य का स्वर्णिम संसार बिल्कुल नज़दीक नज़र आ रहा है। कौन लाया- ब्रह्मा ने। त्याग, तप और सेवा की डगर पर सबको चलाया, ऐसे ब्रह्मा को अद्वितीय ब्रह्मा, अनुपम ब्रह्मा, अनुकरणीय ब्रह्मा, अद्भुत ब्रह्मा अगर कहें तो भी कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

सुप्रसिद्ध जौहरी थे। वे श्री नारायण के अटूट भक्त और नियमित रूप से श्रीमद्भगवद्गीता का पाठन करते थे। उन्हें सन् 1936 में कुछ दिव्य साक्षात्कार हुए जिनमें उन्हें आदेश मिला कि पुरुष और नारी का आपसी संबंध पवित्र स्नेह और आत्मिक दृष्टिकोण पर आधारित हो। इसके लिए सभी को राजयोग की शिक्षा दी जाए माताओं-कन्याओं को उन्होंने ताकीद (आग्रह) किया कि वे पाश्चात्य बनाव-श्रृंगार का अंधानुकरण न करें, प्रतिदिन सत्संग करें, तामसिक आहार (शराब, माँस, अण्डे) का त्याग करें, अपनी दृष्टि-वृत्ति को शुद्ध बनाएँ तथा सरस्वती, दुर्गा आदि के समान गुणवान, शक्तिवान, कलावान, वैराग्यवान बनें ताकि भारत का कल्याण हो।

सर्वस्व कुर्बान

आज के संसार में जहाँ मनुष्य अपनी खूनजाई कन्या को भी संपत्ति का अधिकार देते हिचकिचाता है क्योंकि वह उसे पराया धन मानता है, पिताश्री ने ऐसा हीरे तुल्य, अनोखा, अद्वितीय, ‘न भूतो न भविष्यति’ कार्य कर दिखाया कि साधारण मानव आश्चर्यानन्द से भर जाता है। उन्होंने अपनी सम्पूर्ण चल और अचल संपत्ति (जो उस समय लाखों में थी) कन्याओं और माताओं का एक ट्रस्ट (प्रन्यास) बनाकर उन्हें समर्पित कर दी। इस प्रन्यास की मुखिया बनाया एक 18 साल की गुणमूर्त, अध्यात्मप्रिय, ईश्वरीय लगनशील कन्या को जिसे आज हम माँ जगदम्बा सरस्वती के नाम

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता, वन्दे मातरम्... उक्ति को सार्थक कर साकार करने वाले, नारी में देवत्व का प्राकट्य कर, दैवी मैनेस अपनाकर, नारी को शिव-शक्ति बनाया, जग से अज्ञान अंधकार मिटाने के निमित्त बनाया। ऐसे महान तपस्वी, नवयुग निर्माता प्रजापिता ब्रह्मा ने अनेकों के जीवन परिवर्तन के राहगीर बने।

से जानते हैं, उन्होंने धन तो लगाया ही, साथ-साथ तन और मन से भी, वे इस प्रन्यास में समर्पित हो गए और ‘वन्दे मातरम्’ का नारा लगाते हुए यह घोषणा कर दी कि इस संस्थान की प्रशासनिक मुखिया ओम् राधे (जगदम्बा माँ) है और मैं इनका सेवक मात्र हूँ। इस प्रकार शारीरिक अहंकार में नारी के सामने अपने को ज्ञानी, बुद्धिमान, धन तथा पद-संपन्न

समझकर, उसे दबाकर रखने वाले पुरुष समाज के काफिले के सामने पिताश्री ने एक ऐसा चमत्कारिक कार्य कर दिखाया कि ‘अपने आप सभी कुछ करके अपने आप छिपाया’ वाली उक्ति उन पर पूर्ण चरितार्थ हो गई। निःसंदेह इसके पीछे ईश्वरीय आदेश तो था ही। इस प्रकार नारियों को उठाया।

बाबा द्वारा खोले गए विद्यालयों की उत्तम व्यवस्था को देख सिन्ध के प्रतिष्ठित तथा साधारण जन दोनों ने ही अपने-अपने बच्चों को वहाँ प्रवेश दिलाया और उनके घरों से महिलाएँ तथा कन्याएँ भी सत्संग सुनने आने लगीं।

दादा लेखराज, जिन्हें पिताश्री के सम्मानजनक संबोधन से जाना जाने लगा था, ने संयम-नियम को अपनाकर सुखी जीवन जीने की शिक्षा नर और नारी दोनों को दी। कई युगल तो इसमें ढल गए पर कई जन ऐसे भी थे कि जो शाकाहारी भोजन को ‘घास’ मानते थे और तामसी भोजन के पूर्णतया शिकार थे। उन्हें पिताश्री की ये शिक्षायें कैसे भा सकती थी? इसलिए उन्होंने से सामना होना स्वाभाविक था। नारी को दासी और भोग्या मानने वाले पुरुषों ने अपने-अपने घरों में उन नारियों पर अत्याचार करने आरंभ कर दिए जिन्होंने विषय कुठाराघात से मुक्ति माँगी और तामसिक भोजन को हाथ न लगाने से नम्रतापूर्वक मना कर दिया। यद्यपि वे घर का सब काम करती थीं, पति की सेवा करना अपना कर्तव्य मानती थी, बस काम-विकार से मुक्ति चाहने के नाम



संग्राम में भाग लेने वालों को न दी होगी। परंतु भगवान सर्वसमर्थ हैं और उनकी शिक्षाएँ भी मनोबल बढ़ाने वाली हैं। अत्याचारों के कारण ये कन्याएँ-माताएँ नष्टोन्मोहा बन गईं, अपने कर्तव्य में अडिग हो गईं। इन्होंने त्याग, तप और सेवा की डगर थाम ली और प्रतिज्ञा कर ली- अब हम वासना की जंजीरों से मुक्ति पाकर ही दम लेंगी, हम समाज को प्राचीन देवियों और शक्तियों का कृत्य दोहराकर दिखाएंगी और जिस पुरुष वर्ग ने हम पर अत्याचार किया उनके प्रति भी पवित्र स्नेह और कल्याण की भावना रखकर देश में आध्यात्मिक क्रान्ति लायेंगी।

पवित्रता, त्याग, तपस्या और सेवा के चतुर्मुखी प्रजापिता ब्रह्मा

18 जनवरी को एक बार फिर हम पिताश्री, प्रजापिता ब्रह्मा के बहुमुखी दिव्य जीवन का पुनः स्मरण कर देखेंगे कि उनके प्रेरणादायक जीवन से प्रभावित होकर हमें क्या दिव्य उपलब्धियां हुई। परंतु जब हम उनके जीवन से संबंधित संस्मरणों का मन में प्रादुर्भाव करते हैं तो देखते हैं कि इतनी सारी विशेषताएं इकट्ठी हो, आकर प्रगट होती हैं कि ये सोच पाना भी मुश्किल हो जाता है कि इनमें से किसको प्राथमिकता देकर हम उस पर विचार करें। अतः विशेषताओं के क्रम को एक ओर रखकर हम इस लघु संपादकीय में केवल एक दो ही ऐसे बिन्दुओं पर विचार करेंगे जिनसे उनके व्यक्तित्व, पुरुषार्थ या दिव्यता के कुछ पहलुओं का हमें सही महत्त्व ज्ञात होता है।

एक बात तो ये है कि जो लोग उनके निकट संपर्क में आए और जिन्होंने निष्पक्ष भाव से उनके मुखारविंद द्वारा ईश्वरीय ज्ञान का थोड़ा भी श्रवण कर उस पर मनन किया उनके जीवन में आशातीत परिवर्तन हुआ। जो पहले ये सोचे बैठे हैं कि वे पवित्र बन ही नहीं सकते या अपनी किन्हीं आदतों और व्यसनों को छोड़ ही नहीं सकते या कि वे परमात्मा की अनुभूति कम से कम इस जीवन में तो कर ही नहीं सकते, उनके जीवन में आध्यात्मिक परिवर्तन का एक ज्वार-भाटा आ गया। न केवल उन्होंने अपने जीवन में पवित्रता का वरदान प्राप्त किया और ईश्वरानुभूति तथा आनंद का रसास्वादन किया बल्कि आगे चलकर वे दूसरों के जीवन में भी ऐसा परिवर्तन लाने के योग्य बने। कुछेक वृत्तांत तो ऐसे हुए कि कुटुम्ब परिवार के सभी सदस्यों में एक अनुपम परिवर्तन आया और उन्हें ऐसा अतीन्द्रिय सुख मिला तथा वे आनंद से ऐसे विभोर



ब.कु. गंगाधर

हो गए कि समस्त परिवार ने ही अपना जीवन ईश्वरीय सेवा में जुटा दिया। उन्होंने तन-मन-धन सभी को विश्व सेवा के लिए प्रभु समर्पण कर दिया। संसार भर के धार्मिक, राजनीतिक या सामाजिक इतिहास में ऐसा उदाहरण ढूंढने से भी नहीं मिलेगा कि एक नहीं बल्कि कई परिवारों ने अपना सबकुछ समेटकर अपना सारा जीवन त्याग और तपस्या से व्यतीत करते हुए जन-जन को ईश्वरीय सुख की प्राप्ति के योग्य बनाने के कार्य में लगा दिया हो और स्वयं अपने देह के नातों से अतीत होकर एकसाथ रहे हों। भारत की स्वतंत्रता के संग्राम में कुछेक व्यक्तियों ने अपना सब कुछ देश की स्वतंत्रता के लिए लगा दिया परंतु केवल दो चार परिवारों को छोड़कर कुछ ऐसे परिवारों का उदाहरण नहीं है कि जिनके सभी सदस्य समर्पित हुए हों और इस पर भी ऐसा परिवार तो एक भी नहीं होगा कि जिसके सदस्य देहातीत दृष्टि से एक साथ कार्यरत रहे हों तथा जिन्होंने चर्म चक्षुओं से दिखाई न देने वाले परमात्मा के प्रति स्वयं को समर्पित किया हो, नैतिक मूल्यों के विकास के लिए और जन-जन को प्रभु संदेश देने के लिए अपने जीवन की भेंट की हो।

अन्यश्च, भारत की स्वतंत्रता संग्राम में तो केवल कुछ एक महिलाओं ने भाग लिया था। अधिक संख्या में तो गांधी के ही व्यक्तित्व का ये प्रभाव था कि कुछ परिवार, कुछ महिलाएं और इतने सारे लोग उसमें जी जान लगाकर कार्य कर रहे थे। परंतु प्रजापिता ब्रह्मा के व्यक्तित्व की तो बात ही निराली है। उन्होंने विशेषतया मातृ-शक्ति को जागृत किया, त्याग और तपस्या पर बल दिया, सेवा के संस्कार को उजागर किया और इन चर्म-चक्षुओं के सामने अदृश्य परंतु हर मन में छिपे हुए काम, क्रोध आदि शत्रुओं से संग्राम करने के लिए रूहानी वीरों को तैयार किया। ऐसा शक्ति दल किसी ने तैयार किया हो और मनोविकारों का बिस्तरा गोल करने की चुनौती किसी ने दी हो तो कोई बताएं? भारत से अंग्रेजों को निकालने के लिए 'भारत छोड़ो' नामक घोषणा की गई और आंदोलन छेड़ा गया परंतु मनोविकारों को 'विश्व छोड़ो' के उद्देश्य वाला एलान किसी ने नहीं किया। निःसंदेह, ब्रिटिश साम्राज्य भी शक्तिशाली था परंतु माया का साम्राज्य तो अत्यंत शक्तिशाली है- ऐसा कि सभी उसकी सेना में हैं। उस पर विजय पाने की दुदुम्भी तो प्रजापिता ब्रह्मा ही ने बजाई। यों संसार में अनेक धर्म स्थापक हुए हैं जिनके व्यक्तित्व से काफी लोग प्रभावित हुए परंतु कौन है जिसने योजनाबद्ध रीति से कन्याओं-माताओं को अग्रिम पंक्ति में रखकर माया की मजबूत बेड़ियों को तोड़ने का व्रत लिया हो और स्थाई और सुचारु रूप से इस कार्य को आगे बढ़ाया हो?

विश्व के इतिहास में कई ऐसे भी धर्म प्रचारक हुए हैं जिन्होंने या जिनके शिष्यों ने देश की सीमाओं को पार करके अन्य देशों में अपने मन्तव्यों का प्रचार किया परंतु उनके इस प्रचार से कितने ऐसे लोग तैयार हुए जिन्होंने दृढ़तापूर्वक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन, आहार, विहार, व्यवहार तथा आचार, संग और अध्ययन की पवित्रता का पालन किया और जिन्होंने योगयुक्त होकर ईश्वरानुभूति की तथा माया को चुनौती दी कि वह संसार छोड़ दे। यह पिताश्री के त्याग और तपस्या एवं पवित्रता तथा आत्मनिष्ठा ही का फल था कि अनेकानेक परिवारों और नर-नारियों ने अपना जीवन ईश्वरीय सेवा में लगा दिया। जीवन एक बहुत बड़ी और मूल्यवान निधि है। अतः समस्त जीवन को एक ही लक्ष्य के प्रति लगा देना और स्वेच्छा से स्वयं को अनेक व्रतों में संकल्पबद्ध करके उसी में जीवन लगा देना कोई मासी का घर नहीं है। यह तभी संभव है जब जीवन में नित्य प्रगति और प्रेरणा का स्रोत था। वह पवित्रता, त्याग, तपस्या, सेवा का चतुर्मुखी मूर्त रूप था। स्वयं को तथा जगत को बदल देने का दृढ़ संकल्प लिया। ऐसे हम सबके अति स्नेही, अति प्यारे, ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त दिवस पर, उन जैसा बनने का दृढ़ संकल्प लेकर प्यार का सबूत दें।



राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

बाबा की सबसे पहली विशेषता रही संपूर्ण निश्चय। ब्रह्मा बाबा को शिव बाबा ने टच किया और ब्रह्मा बाबा ने उस संकल्प में थोड़ा-सा भी संशय नहीं लाया। उन्होंने कभी यह नहीं सोचा क्या होगा, कैसे होगा, मैं सब-कुछ छोड़ तो दूँ लेकिन आगे स्थापना कर सकूँगा या नहीं कर सकूँगा? नयी बात थी ना! दुनिया में द्वार पर से लेकर अभी कलियुग तक जो बात किसी ने नहीं कही थी कि प्रवृत्ति में रहकर भी आप निर्विकारी रह सकते हैं, पवित्र रह सकते हैं। यह बात किसी ने कही है? अभी तक भी इतने साधु, संत, महात्मा, महामण्डलेश्वर आदि जो भी हैं, वे भी विश्वास नहीं करते कि आग और कपास साथ में हों और आग नहीं लगे, यह हो ही नहीं सकता- वे ये शब्द बोलते हैं लेकिन हम क्या बोलते हैं? आप सभी भी प्रवृत्ति में रहते हैं ना! आपका दिल क्या कहता है? आग और कपास होते भी अपवित्रता की आग नहीं लगती है ना! नयी बात है ना यह! झगड़ा जब शुरू हुआ, वो किससे हुआ? इससे ही ना!

मुझे याद है, शुरू-शुरू में सिन्ध-हैदराबाद में बहुत हंगामा हुआ। बाबा को पंचायत में बुलाया गया। पंचों ने बाबा से कहा कि आप इन माताओं और कन्याओं से कहो कि पवित्र न रहें। हमारे आगे आप वायदा करो। बाबा ने कहा कि मैं यह वायदा नहीं कर सकता और यह बात उनसे कह भी नहीं सकता क्योंकि शिवबाबा ने मुझे यही आज्ञा दी है कि तुमको पवित्र बनकर,

परमात्मा पर सम्पूर्ण निश्चय का सबूत दिया ब्रह्मा बाबा ने...

पवित्र दुनिया की स्थापना करनी है। इसका फाउण्डेशन ही यह है और मैं कहूँ कि पवित्र नहीं बनो तो पवित्र दुनिया स्थापन होगी कैसे? उन्होंने कहा कि इन माताओं-कन्याओं को मार पड़ेगी, बंधन पड़ेंगे,आपके खिलाफ विरोध होगा। बाबा ने कहा कि मेरे को शिवबाबा का डायरेक्शन है, मैं उसको टाल नहीं सकता। इतनी हिम्मत चाहिए ना!

बाबा को ज़रा भी संशय नहीं आया। बाबा इतना बड़ा जवाहरी था। कभी सोचा कि मेरे परिवार का क्या होगा? मेरी प्रतिष्ठा का क्या होगा? वे भूखे तो नहीं मरेंगे! ऐसा सोचा? नहीं। सबकुछ समर्पण कर दिया। उनमें यही लगन थी कि बाबा जो कहता है मुझे वैसे ही करना है। इसको कहा जाता है निश्चय। आपको पता है, आपके सामने आदर्श हैं कि ब्रह्माकुमार-कुमारी बनेंगे तो क्या-क्या करना पड़ेगा, कैसे करना पड़ेगा। आपके आगे उनका एग्जाम्पल है ना, जिन्होंने आपसे पहले ही पवित्र गृहस्थ जीवन अपनाया है। उनको देखकर आपने निर्णय लिया कि हमें भी ऐसे रहना है, ऐसे करना है। ब्रह्मा बाबा के आगे कोई दृष्टांत, एग्जाम्पल नहीं था। नयी बात थी। इतनी नयी बात कि लोग असम्भव मानते थे। उस असम्भव को बाबा ने सम्भव बनाकर दिखाया। संकल्प मात्र में भी, स्वप्न मात्र में भी बाबा को संशय नहीं आया। इसको कहते हैं, बाप समान। बाप समान बनना माना साक्षात् बाबा बनना। तभी हम साक्षात्कार मूर्त बन सकते हैं।

बाबा को हमने सदा ही उपराम स्थिति में देखा

मीठे बाबा हमें सदैव बेहद सेवाओं में कभी कहां, कभी कहाँ भेजते ही रहे। अनेक सेंटर खोलने के निमित्त बनाया। कभी दिल्ली तो कभी मुम्बई, कभी कोलकाता, तो कभी बिहार भेजते थे। विदेश में जापान आदि की भी अचानक यात्रा करायी। सदैव बाबा का यह वरदान था कि बच्ची, हर समय एवररेडी रहना। बाबा का एक इशारा आता था कि तुम्हें यहाँ से वहाँ जाना है। मैं कहती थी, जी बाबा। बाबा रोज बेहद सेवा की कुछ न कुछ प्रेरणा भी देते थे और आज्ञा भी करते थे। अठारह जनवरी से पहले मैं गामदेवी मुम्बई में रहती थी। थोड़े दिन पहले ही मुम्बई से बाबा के पास पार्टी लेकर आयी थी। पार्टी लेकर चली गयी। फिर और एक छोटी पार्टी लेकर दो दिन के बाद मधुबन आयी। उस समय दीदी इलाहाबाद के कुम्भ मेले में गयी थी। चौदह जनवरी मकर सक्रांति पर वहाँ मेला लगता है। उस समय विशेष अर्धकुंभ मेला था। जब मैं यहाँ(मधुबन) आयी तो बाबा ने कहा, बच्ची, तुम अभी आयी हो, दो-चार दिन रूक जाना। बाबा कभी भी मुझे दो दिन से ज़्यादा नहीं रहने देते थे। कभी मैं कहती

थी, बाबा, मैं चार-पाँच दिन रहूँगी, तो बाबा कहते थे, क्यों, कोई सेवा नहीं है क्या? क्यों यहाँ रहना है? नहीं, सेवा पर चले जाओ, बादल भरके जाओ और वहाँ बरसो। जब बाबा ने खुद कहा कि दो-चार दिन रह जाओ तो मैंने कहा, जी बाबा। मैं आयी थी 14 जनवरी को और



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

जाना था 16 जनवरी को। बाबा ने कहा, बच्ची,पार्टी को जाने दो, दीदी भी नहीं है, थोड़े दिन रह जाओ। उस समय मधुबन की सारी कारोबार दीदी ही सम्भालती थी। बाबा हर बात में हम बच्चों को अनुभवी बनाते थे।

अठारह जनवरी की सुबह बाबा ने मुरली नहीं चलायी। सवेरे से ही बाबा का स्वास्थ्य ठीक नहीं था। यज्ञ

ब्रह्मा बाबा को हमने कभी साधारण रूप में नहीं देखा



राजयोगिनी दादी जानकी जी

आरम्भ से ही मुझे बाबा के मस्तक से लाइट-माइट का साक्षात्कार होता ही रहा। बाबा का त्याग भी प्रैक्टिकल था, तपस्या में सदा तत्पर थे और सेवा में हमने उन्हें अथक होकर सभी को सुख देते देखा। हमने बाबा को कभी भी सहज साधारण मूड में नहीं देखा। अव्यक्त होने के तीन वर्ष पहले से ही बाबा एकदम न्यारे बन गये थे। कोई भी बात जैसे कि सुनते हुए भी नहीं सुनते थे। निमित्त बनकर यज्ञ कारोबार चलाते थे। कराची में बाबा ने देह के सम्बन्ध तोड़कर एक परमात्मा से कैसे जोड़ें- यह अभ्यास किया और कराया। योग कराने के बाद हम बाबा से पूछते थे- बाबा आप कहाँ थे? तो बाबा कहते थे कि "मैं तुम बच्चों को ही दृष्टि नहीं दे रहा था, सारे विश्व की आत्माओं को दृष्टि दे रहा था। मैं तो सारे विश्व का पिता हूँ।" कभी बाबा कहते थे कि चलो बच्चे, वाणी से परे, निर्वाणधाम, वहाँ बैठते हैं जहाँ सब आत्माएं रहती हैं। ऐसे बाबा विभिन्न बातों का अभ्यास करते और करवाते थे। अव्यक्त होने के बाद अब भी बाबा बेहद विश्व सेवा कर रहे हैं। साकार में बाबा जब थे तो तब कईयों को घर बैठे उनका साक्षात्कार होता था। ऐसे अव्यक्त होने के बाद कई विदेशी भाई-बहनों को ब्रह्मा बाबा का और मधुबन का साक्षात्कार हुआ है। हरेक को लगता है कि यह हमारा बाप है, ऐसे नहीं लगता कि ये केवल हिन्दुओं का ही है। सबको अपनेपन की भासना आती है। उनको लगता है कि यह हमारा परमात्मा से सम्बन्ध मात्र में भी, स्वप्न मात्र में भी बाबा को संशय नहीं आया। इसको कहते हैं, बाप समान। बाप समान बनना माना साक्षात् बाबा बनना। तभी हम साक्षात्कार मूर्त बन सकते हैं।

साकार में बाबा जब थे तो तब कईयों को घर बैठे उनका साक्षात्कार होता था। ऐसे अव्यक्त होने के बाद कई विदेशी भाई-बहनों को ब्रह्मा बाबा का और मधुबन का साक्षात्कार हुआ है। हरेक को लगता है कि यह हमारा बाप है, ऐसे नहीं लगता कि ये केवल हिन्दुओं का ही है। सबको अपनेपन की भासना आती है। उनको लगता है कि यह हमारा परमात्मा से सम्बन्ध मात्र में भी, स्वप्न मात्र में भी बाबा को संशय नहीं आया। इसको कहते हैं, बाप समान। बाप समान बनना माना साक्षात् बाबा बनना। तभी हम साक्षात्कार मूर्त बन सकते हैं।

बाबा ने जो शिक्षाएं दी हैं- विचार सागर मंथन करें, ज्ञान की गहराई में जायें, जिससे बुद्धि को परचितन करने की फुर्सत नहीं मिले। बीती बातों का चिंतन नहीं, फालतू बातें सुनना नहीं, ज़रूरत की बातें सुनाई पड़ें।

वैसे तो मैं बाबा के पास पीछे आई हूँ, लेकिन समर्पित होने के पहले जब घर में रहती थी, तब भी मेरे सामने बाबा फरिश्ता रूप में घूमते थे। गीता पढ़ते समय भी अनुभव करती थी कि बाबा मेरे सामने खड़े हैं और मुझे बुला रहे हैं। भक्ति में मैंने बूढ़े ब्राह्मण में सत्य नारायण स्वामी को देखा था तो जब मैं बाबा के पास आई तो सत्य नारायण स्वामी जैसे ही भासना आई। मुझे सदा अव्यक्त स्थिति का गुप्त नशा और निशाना रहता था। मैं तीनों बाप- साकारी, आकारी व निराकारी को सामने खड़े अनुभव करती हूँ। साकार को फॉलो करना है। आकारी ब्रह्मा बाबा को देखती हूँ कि कैसे इतनी बड़ी ज़िम्मेवारी सम्भालते हुए संपूर्ण बने, निराकारी को सदा नज़रों के सामने रखती हूँ। जब भी समय मिलता है विदेही स्थिति का अभ्यास करती हूँ।

मैंने बाबा को कभी साधारण मनुष्य सदृश्य नहीं देखा। पाँच तत्वों के शरीरधारी एकदम हल्के-फुल्के फरिश्ता अनुभव होते थे। उनका बोल-चाल, उठना-बैठना अनोखा ही था। उनकी गंभीर मुद्रा से लगता था कि वे प्रभु-प्रेम में डूबे हुए हैं। उनके नैन से और मुख से एक अपूर्व तेजस्विता छलकती थी। वे जीवनमुक्त अवस्था में प्रत्येक कार्य दिव्यता के साथ करते थे। सत्यता, पवित्रता और दिव्यता के अवतार दिखाई देते थे।

उनसे भी मिले। फिर उस दिन बाबा ने कहा, आज रात का भोजन थोड़ा जल्दी कर देते हैं। उस दिन बाबा ने रात 7:30 पर भोजन किया। वैसे तो रोज़ 8:30 बजे भोजन करते थे। भोजन के बाद बाबा रात्रि क्लास में भी आये। क्लास में बाबा ने शिक्षाओं भरी मधुर मुरली सुनायी।

अच्छा बच्चे विदाई

उस दिन बाबा आठ बजे ही क्लास में आये और साकार रूप के वे अंतिम महावाक्य तो दिल में समाने जैसे हैं। बाबा ने कहा था - "बच्चे, सिमर सिमर सुख पाओ, कलह-कलेश मिटें सब तन के, जीवनमुक्ति पाओ।" "बच्चे, निन्दा हमारी जो करे, मित्र हमारा सोई। तुम्हें किसी की भी निन्दा नहीं करनी और किसी से वैर विरोध भी नहीं रखना।"

इस प्रकार याद की यात्रा पर बल देते हुए यज्ञपिता बाबा खड़े होकर गेट की ओर चले और फिर गेट पर रूक गये और बोले, "बच्चे, निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी बनो। जैसे बेहद का बाप सम्पूर्ण व सदा निर्विकारी है, सदा निराकार है, निरहंकारी है वैसे ही बच्चों को भी बनना है।" फिर उस अंतिम घड़ी के पूर्व बाबा के मुख से ये शब्द निकले, "अच्छा बच्चे, विदाई।"

बाबा ने ज्ञान रत्नों से श्रृंगार किया

ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने अपने अनुभव में बताया कि जब मैंने पहली बार ब्रह्मा बाबा को देखा तो मुझे बाबा में विष्णु का साक्षात्कार हुआ। मुझे लगा कि शायद मैं स्वप्न देख रही हूँ, लेकिन वो स्वप्न तो नहीं था। वास्तव में बाबा साक्षात् विष्णु स्वरूप दिखाई देते थे। बाबा हम छोटे बच्चों को हर बात बड़े प्यार से सिखाते थे। गलती होने पर भी बाबा ने हमें कभी भी नहीं डांटा और ही प्यार के सागर बाप ने हमें बड़े प्यार से राजकुमारी की तरह पालना दी। शिक्षाएं भी बहुत प्यार से समझाते थे। जिन्हें हम सहर्ष स्वीकार करते थे। यज्ञ की हर प्रकार की सेवा बाबा स्वयं खुद करके हमें सिखाते थे। बाबा को देखकर हम भी चाहे कर्मणा, चाहे वाचा, छोटी-बड़ी सेवा बड़े प्यार से करते थे, क्योंकि मेरा लक्ष्य था कि मुझे इस अविनाशी रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ में सम्पूर्णतया स्वाहा होना है।

हमें तपस्वीमूर्त बनाया

हम आत्माओं को शक्तियों से तथा गुणों से सम्पन्न बनाने के लक्ष्य से खास वतन से शिवबाबा ने तपस्या अर्थात् भट्टी का प्रोग्राम भेजा। हम दिन-रात योगाभ्यास करते थे। कभी-कभी 8-8 घंटे भी तपस्या करते थे। जिसमें फरिश्तेपन की स्थिति का तथा शक्तिशाली स्थिति का अनुभव होता था। मैं वो ही शक्ति हूँ जिसकी मन्दिरों में पूजा-अर्चना होती है, ऐसा स्वयं को शक्ति स्वरूप अनुभव होता था।

बाबा हमें भविष्य में होने वाली घटनाएं सुनाते थे कि कैसे विनाश होगा, कैसी भयानक परिस्थितियां पेपर के रूप में आपके सामने आयेंगी और कैसे उस समय तुम्हें अपनी शक्तिशाली अचल-अडोल स्थिति रखनी होगी। हम इस योग की भट्टी में विशेष मौन भी रखते थे। जिससे हमें योगाभ्यास में सुन्दर अनुभूतियां होती थीं। भट्टी में स्वर्गिक जीवन के अनोखे दृश्य भी दिखाई देते थे जिससे बुद्धियोग पुरानी दुनिया से स्वतः ही हटता था। वही कठिन तपस्या जो बाबा ने



राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारी

14 वर्ष के कालावधि में कराई, जीवन में मददगार बन गई। उससे योग हमें सहज अनुभव होता है।

बाबा ने हमें ज्ञान रत्नों का दान करना सिखाया

बाबा सदैव कहते थे, बच्चे, ये एक-एक ज्ञान रत्न अमूल्य है। जो इन्हें धारण करेगा वो कौड़ी से हीरे तुल्य बन जाएगा। जितना तुम महादानी बनकर अनेकों को ये खजाना बांटोगे उतनी ही ये वृद्धि को पायेगा और अनेकों की दुआयें तुम्हें आगे बढ़ायेंगी।



रायपुर-छ.ग.। माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को भाई दूज का तिलक लगाते हुए ब्रह्माकुमारीज की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. कमला दीदी। साथ हैं ब्र.कु. सविता दीदी।



छतरपुर-म.प्र.। बुंदेलखंड केसरी छत्रसाल स्मारक पब्लिक ट्रस्ट द्वारा छतरपुर स्थापना दिवस पर गाँधी चौक बाजार स्थित ट्रस्ट भवन में आयोजित कार्यक्रम में समाज सेवा के क्षेत्र में अपनी अथक सेवाएं और आध्यात्मिकता की अलख जगाने के लिए स्थानीय सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु.शैलजा बहन को सारस्वत सम्मान स्मृति चिह्न, शॉल, श्रीफल के द्वारा सम्मानित किया गया एवं साहित्य की दिशा में कार्य करने वाले पद्मश्री सम्मान से सम्मानित डॉ.अवध किशोर जड़िया को भी सम्मानित किया गया। इस दौरान विधायक आलोक चतुर्वेदी, नगरपालिका अध्यक्ष ज्योति चौरसिया, पूर्व विधायक उमेश शुक्ला, छत्रसाल स्मारक पब्लिक ट्रस्ट अध्यक्ष हरि प्रकाश खरे, सचिव सुरेंद्र शर्मा, संयोजक योगेंद्र प्रताप सिंह एवं समस्त ट्रस्टीगण सहित नगर के प्रसिद्ध गीतकार, कवि और समाजसेवी उपस्थित रहे।



राजगढ़-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज के शिव वरदान भवन में शिक्षक दिवस पर आयोजित 'शिक्षक सम्मान समारोह' का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए जिला पंचायत अध्यक्ष चंदर सिंह सोंधिया, जिला शिक्षा अधिकारी बीएस बिसोरिया, जिला प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी के.एन. गुप्ता, केंद्रीय विद्यालय के प्राचार्य नंदकिशोर सोनी, पीजी कॉलेज के प्रोफेसर बी.एस. बेस, प्रो. एम.एल. गुप्ता, ब्रह्माकुमारीज की जिला प्रभारी ब्र.कु. मधु बहन, समाजसेवी प्रताप सिंह सिसोदिया तथा आशीर्वाद फाउंडेशन की संस्थापक श्रीमति दिव्या विजयवर्गीय।



चेन्नई-अड्यार(तमिलनाडु)। दीपावली के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज के वैकुंठ पीस गार्डन, सिरुथावुर में आयोजित कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. मुथुमणि बहन, निदेशिका, ब्रह्माकुमारीज अड्यार, सुधीर शेलके, स्टेशन डायरेक्टर, मद्रास ऑटोमैटिक पावर स्टेशन, बालासुब्रमण्यन, लायंस क्लब, थिरुपौर, बालाकृष्णन, लायंस क्लब, थिरुपौर, वासुदेवन, हेड, एचआर, एमएपीएस, श्रीमति सुभा, सीएसआर प्रोजेक्ट मैनेजर, श्रीनिवास, मैनेजर, इंजीनियरिंग डिपार्ट., एमएपीएस तथा अन्य गणमान्य अतिथियों सहित विशेष रूप से सेवा समाज होम के बच्चे शामिल रहे।



भंडारा-महा.। लव कुमार, 206 कोबरा बटालियन के कमांडिंग ऑफिसर को ईश्वरीय निमंत्रण देने के पश्चात् समूह चित्र में हैं ब्र.कु. शालू बहन, ब्र.कु. टीनेश्वरी बहन, ब्र.कु. गौरीशंकर भाई, ब्र.कु. प्रकाश भाई तथा ब्र.कु. सोनाली बहन।

समस्या के गीत गाने से समाधान नहीं मिलते

- ब्र.कु. उर्वशी बहन, नई दिल्ली



कुदरत ने तो आनंद ही आनंद दिया था, दुःख तो... हमारी खोज है...

वास्तव में यही सच है कि दुःख हमारी ही खोज है। बताइये क्या नहीं दिया बाबा ने हम बच्चों को, खाने का भोजन नहीं है, पहनने का वस्त्र नहीं है या सोने को बिस्तर नहीं है? बाबा ने सब कुछ दिया है और अच्छे ते अच्छा दिया है फिर भी आप कहते हो कि वो सुख नहीं, वो प्राप्ति नहीं है। देखो बाबा मिला तो सब कुछ मिला। क्या आप ये महसूस करते हो? बाबा ने हमें वो सबकुछ दिया जो गुरु, साधु, संत व मनुष्य आत्मा हमें कभी दे नहीं सकते। बाबा ने हमें कितने खजानों से भरपूर किया है स्मृति तो लाओ जरा सभी की। बाबा ने हमें सच्चा सुख दिया, अविनाशी ज्ञान दिया जो 21 जन्म चलेगा, किसी के छिनने से खत्म नहीं होगा, किसी को दान करने से कम नहीं होगा, ये आधाकल्प चलेगा। आप सोचो कि हमारा अंत का जन्म जब इतना श्रेष्ठ है तो पहला जन्म कितना श्रेष्ठ होगा! हम सच में कोई साधारण आत्माएं नहीं हैं लेकिन हम स्वयं को साधारण समझ लेते हैं। हमें परेशान हमारा बीता हुआ कल और आने वाला कल करता है और हमारी अनंत इच्छाएं, कामनाएं करती हैं। अब बीते कल को तो कोई बदल नहीं सकता तो उसकी फिक्र करना तो हमारी अज्ञानता ठहरी।

आने वाले कल्प में हूबहू वही होगा जो कल्प पहले हुआ था, यहाँ आप ड्रामा का पाठ पक्का कर लें और रही बात अनंत इच्छाओं की तो वह स्वतः ही समाप्त होने लगेंगी। जब आपका प्रेम बाबा से बढ़ने लगेगा। बाबा से प्रेम बढ़ाने का साधन है बाबा की मुरली। मुरली ही एक ऐसी दवा है जिसमें आत्मा की हर बीमारी का इलाज है, क्योंकि जब आत्मा सूक्ष्म है तो उसकी बीमारी सूक्ष्म है, अब जब हमारी बीमारी सूक्ष्म है तो दवा भी तो सूक्ष्म ही होगी और इलाज करने वाला भी यकीनन फिर सूक्ष्म ही होगा (शिव बाबा) ना! कई बार हम बच्चे

बाबा से गलत उम्मीद लगा लेते हैं जैसे बाबा हमें एक घर दिला दें, संतान को सुधार दें, धंधा अच्छा कर दें, नौकरी लगवा दें ये सभी बाबा हमें देने नहीं आए हैं, बाबा हमारी कोई भी हद की कामना पूर्ण करने नहीं आए। बाबा हम आत्माओं को ज्ञान व गुणों से भरने आयें हैं, आप जितना चाहे उतना ले लें। सरल शब्दों में कहें तो बाबा हमें बेहद का वर्सा देने आए हैं। अब कई बार हम ब्राह्मण आत्माओं की बाबा से शिकायतें बहुत होती हैं जैसे बाबा ये ना हुआ होता तो ये भी न होता, वो ऐसा व्यवहार नहीं करते तो आज ये समस्या भी ना आती, परन्तु जो बीत चुका

● **परिस्थिति, समस्याएँ हमें नया अनुभव देती हैं। समस्याओं का रोना रोने के बजाय इस दृष्टिकोण को बदलें और आगे बढ़ें।**

● **परमात्म प्रदत्त मिली खूबियों को अपने में झाँके और निहारें। जो कुदरत ने दिया है उन प्राप्तियों को समय प्रति समय उपयोग और प्रयोग में लायें।**

उसका चिंतन करने से तो कुछ बदलेगा नहीं ना, लेकिन हाँ हमारी शक्ति व समय जरूर व्यर्थ चला जाएगा इसलिए बीती की बिंदी लगाओ और आगे बढ़ो, ड्रामा के पट्टे पर स्थिर रहो। समस्या तो आएंगी ही और अंत तक आएंगी क्योंकि जितना-जितना हम बाबा के करीब आते हैं उतनी ही परीक्षाएं बढ़ती जाती हैं।

विद्यालय की याद है ना कि 1,2 कक्षा में 3 परीक्षाएं ही होती हैं हिंदी, अंग्रेजी और गणित की और जब हम हाई स्कूल व इंटर में आ जाते हैं तो परीक्षाएं भी 5,6 होती हैं। पेपर आना अर्थात् आगे बढ़ना इसलिए अपनी समस्या से डरना कोई वीरता नहीं है हमारी। याद रखिये परीक्षा नहीं तो उन्नति

नहीं। वैसे भी रोना रोने से कभी समस्या का समाधान नहीं मिलता। बाबा अक्सर कहते भी हैं कि पश्चाताप करने से आप प्रायश्चित्त करो इससे आपकी गलती भी सुधरेगी व समय भी व्यर्थ नहीं जाएगा। गलती करना गलत नहीं है परन्तु गलती को पुनः दोहराना गलत है। एक उदाहरण देते हैं- आपकी कोई बीमारी होती है तो क्या आप बैठकर यही सोचते रहते हैं की हाय! मुझे तो फलानी बीमारी हो गयी है या आप डॉक्टर के पास जाते हैं? डॉक्टर के पास जाते हैं ना! अब डॉक्टर भी आपको देखते ही आपका इलाज शुरू करता या सिर्फ यही बोलता है कि - अच्छा आपको बीमारी हो गयी, ये गलत हुआ? इलाज शुरू करता है ना परन्तु और फिर आप ठीक हो जाते हैं। और जो डॉक्टर के पास जाते ही नहीं सिर्फ बीमारी के गीत गाते रहते तो वो ठीक भी कभी होते नहीं। बिल्कुल ऐसा ही हिसाब हमारा और हमारी जिंदगी के साथ है अगर आप अपनी समस्या का सिर्फ वर्णन कर रहे हैं तो आप कभी भी समाधान नहीं ढूँढ पाएंगे इसलिए अब समस्या पर नहीं समाधान पर जाओ।

आपके समाधान आपको मुरली से मिल सकते हैं, योग में बैठने पर बाबा से टचिंग हो सकती है, आपके साथी, सहयोगी आपको मदद दे सकते हैं, किसी से भी व किसी भी रूप में आपको आपका समाधान मिल सकता है। इसलिए अब अपना दृष्टिकोण बदलें और समस्या की बजाय समाधान पर ध्यान दें जिससे आपकी मुश्किल भी हल होगी और समय का भी आप लाभ ले सकेंगे। बाबा हमें रोज नया दृष्टिकोण देते हैं मुरली में, यदि रोज हम उसे भी उपयोग में लाएं तो आप कुछ दिन में ही ये अनुभव करेंगे की समस्या तो वास्तव में हमारी कुछ थी ही नहीं। भगवान के बच्चे भी समस्याओं के दुबन में फँसे रहेंगे तो अज्ञानी मनुष्य आत्माओं को हल कौन देगा, तनिक विचार करो! इसलिए अब बाबा पर पूरा बलिहार जाओ अपने भविष्य की बागडोर तो बाबा के हाथ में सौंपी ही है परन्तु अपना बीता कल भी पूर्ण रीति से सौंप दोजिए क्योंकि कई बार हमें हमारा अतीत ही इस ज्ञान मार्ग में आगे नहीं बढ़ने देता है।

ब्रह्मा बाबा को हमने हर शिक्षा की प्रतिमूर्ति देखा

1951 में 11 वर्ष की आयु में मुझे मेरी मौसी द्वारा इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय एवं ब्रह्मा बाबा के बारे में पता चला। क्योंकि मेरी मौसी 1937 से ही इस संस्थान में समर्पित थीं। उनके बताने के पश्चात् मुझे इस बारे में और जानने की जिज्ञासा रहने लगी। फिर 1958 में ब्रह्मा बाबा का दिल्ली में आना हुआ, उस समय मैं कॉलेज में पढ़ती थी। मैंने सेवाकेन्द्र से संपर्क कर बाबा से मिलने की इच्छा जाहिर की। तो मुझे सहर्ष स्वीकृति मिली। कॉलेज से आते समय शाम को मैं सेवाकेन्द्र पर बाबा से मिलने गई तो जैसे ही मैं कमरे में प्रवेश हुई तो सामने ब्रह्मा बाबा चेयर पर बैठे थे। कुछ पल के लिए तो इतना सुंदर दृश्य लगा जैसे ऐसा मैंने पहले कभी देखा नहीं था। बाबा ने मुझे बहुत आदर से अपने समीप कुर्सी पर बिठाया और बहुत प्रेम से बात करनी शुरू की। उससे पहले मैं कई गुरुओं, संत-महात्माओं आदि से भी मिली थी, लेकिन मेरे पर जो प्रभाव ब्रह्मा बाबा को देखने से पड़ा तो मुझे ऐसा लगा कि रूहानियत का मतलब यह नहीं कि जीवन सुचारु न हो, और आध्यात्मिकता का मतलब ये नहीं है कि आपकी रहन-सहन में कोई भी तरह का व्यवस्थित रूप न हो। तो मैंने वहां देखा कि ब्रह्मा बाबा का अपना व्यक्तित्व, जिस तरह के उनके वस्त्र थे, बिल्कुल साफ, स्वच्छ, बेशक बहुत-बहुत साधारण और सिम्पल, लेकिन उसमें इतनी रॉयल्टी थी, इतनी प्यूरिटी थी, तो मैंने अनुभव किया कि उनके जीवन में आध्यात्मिकता और बौद्धिकता का बहुत संतुलन था। उसके बाद पहले-पहले बाबा ने मुझसे मेरे व्यक्तिगत जीवन की जानकारी करने के लिए कि आप क्या करती हैं, कहां पढ़ती हैं, आपकी हाँबी क्या है, आपका जीवन में लक्ष्य क्या है, आप क्या शिक्षा लेती हैं, आपके क्या सब्जेक्ट्स हैं कॉलेज में, तो जैसे बाबा बीस-पच्चीस मिनट तक इस तरह से बात करने लगे। मुझे बहुत अच्छा लगा



राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी, अति. मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज

क्योंकि मैं ये एक्सपेक्ट नहीं करती थी कि इतनी महान आत्मा इस तरह की बातों में रुचि लेंगी। बाद में बाबा ने मुझे बहुत सारे ब्लेसिंग्स भी दिये।

बाबा हर शिक्षा की प्रतिमूर्ति

दिल्ली में बाबा से इस मिलन के बाद जब मेरा माउण्ट आबू में बाबा के पास आना हुआ तो वहां मैंने देखा कि जो भी शिक्षायें बाबा हम बच्चों को देते थे, वो उसकी एक मूर्ति थे, उदाहरण थे। जहाँ तक मुझे याद है, ऐसा कभी नहीं हुआ कि बाबा ने कोई बहुत बड़े-बड़े डायरेक्शन्स ऐसे सामने से दिये हों। लेकिन बाबा का अपना व्यवहार, बाबा की अपनी चलन, बाबा का चेहरा ऐसा उदाहरण था कि मैं समझती हूँ कि जो कुछ भी शिक्षा हमें मिलती थी तो वो जैसे कि प्रैक्टिकल में सामने एक एग्जाम्पल हमें दिखाई देता था। मुझे याद है कि एक बार हमने देखा कि कोई भाई थे, वो कुछ ले जा रहे थे, उनके हाथ में शायद कुछ बिजली का सामान था। तो वो उनके हाथ से गिर गया। हो सकता है उनका ध्यान कहीं और चला गया हो। तो जो

लोग आसपास खड़े थे, कहने लगे अरे तुमसे ये क्या हुआ! लेकिन बाबा बहुत धैर्यता से प्रेम की दृष्टि देते हुए वहां से निकले और उन्होंने कुछ भी कहा नहीं। उसके बाद हम बाबा के कमरे में गये और बाबा से कहा कि आपने तो ऐसे जैसे देखा ही नहीं कि क्या हुआ! तो बाबा ने कहा कि एक तो उससे वस्तु गिरी, तो उस समय वो खुद भी घबरा रहा था, और उसके बाद अगर हम कुछ कहेंगे, तो उसने जानबूझ कर तो नहीं किया। भूल हो गई, वो ड्रामा में नूँध थी। तो जैसे हमने देखा कि बाबा हर बात को, जो भी उनके सामने परिस्थिति आती थी, तो उसमें जो ईश्वरीय ज्ञान है, योग बल और साइलेंस का बल, उसका बहुत प्रयोग करते थे। मैंने बाबा के अंतिम पूरे वर्ष में ये अनुभव किया कि हम कोई भी विस्तार में बात करते या रिपीट करते थे तो बाबा तुरंत कहते कि बच्चे, बाबा समझ गए, बार-बार क्यों रिपीट करते हो। बाबा के ध्यान पर आ गया। तो जैसे कि बाबा इस सृष्टि में पार्ट बजाते हुए भी ऐसा लगता था कि अपनी सम्पूर्ण स्थिति से, अपनी साकार देह से न्यारे होते जा रहे हैं।

मैं अपना ये सौभाग्य समझती हूँ कि मुझे इतने वर्ष बाबा ने जो कदम-कदम पर शिक्षायें दीं, बाबा मुझे हमेशा कहते थे कि बच्ची तुम विश्व में सेवा करने जाओगी। बाबा ये चाहता है कि तुम्हारी बुद्धि कहीं भी न किसी वस्तु, न किसी व्यक्ति में जाये। मुझे बाबा की वो बात इतनी याद रहती है और दिल से शुक्रिया निकलती है कि आज हम ये कह सकते हैं कि हमारी बुद्धि का सम्बन्ध या योग एक बाबा के साथ ही है। बाबा की ऐसी मधुर शिक्षायें मेरे जीवन के लिए वरदान हो गई और आज समस्त विश्व की सेवा करने के मैं निमित्त बनी। तो ऐसे प्यारे बाबा के अव्यक्त दिन पर बाबा की मधुर स्मृतियाँ मानस पटल पर बारंबार आ रही हैं।



इंदौर-म.प्र.। इंदौर ज़ोन के पूर्व निदेशक तथा ब्रह्माकुमारीज मीडिया प्रभाग के पूर्व अध्यक्ष ब्र.कु. ओमप्रकाश भाई जी के 7वें पुण्य स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में 'राष्ट्र निर्माण और मीडिया' विषय पर आयोजित मीडिया परिसंवाद कार्यक्रम में महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्व विद्यालय वर्धा के कुलपति प्रो. रजनीश शुक्ल, मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी के निदेशक तथा देवपुत्र पत्रिका के संपादक विकास दवे, कुशाभाउ ठाकरे पत्रकारिता विश्व विद्यालय रायपुर के पूर्व कुलपति डॉ. मानसिंह परमार, नई दुनिया के प्रधान संपादक सद्गुरु शरण अवस्थी, दैनिक भास्कर के संपादक अमित मंडलोई, एस.आर. चैनल के संपादक प्रो. राजीव शर्मा, प्रजातंत्र के संपादक अनिल कर्मा, नवभारत के समूह संपादक क्रांति चतुर्वेदी, माउंट आबू से मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय समन्वयक राजयोगी ब्र.कु. शांतनु भाई, माउंट आबू से मधुबन न्यूज के प्रधान संपादक राजयोगी ब्र.कु. कोलम भाई, माउंट आबू से ब्र.कु. तुलसी बहन, इंदौर ज़ोन की मुख्य क्षेत्रीय समन्वयक राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी, मीडिया विंग कोर कमेट्री की सदस्य ब्र.कु. अनिता बहन व इंदौर के साथ-साथ उज्जैन, देवास, रतलाम एवं राजगढ़ आदि समूचे मालवांचल के प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से जुड़े मीडियाकर्मी शामिल रहे।



कटनी-सिविल लाइन(म.प्र.)। कलेक्टर अवि प्रसाद के कटनी जिले में पदभार संभालने पर उनका सम्मान करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र से ब्र.कु. दुर्गा बहन।



भिलाई-छ.ग.। भिलाई प्रौद्योगिकी संस्थान में बी.टेक छात्रों को 'पॉजिटिव थिंकिंग' विषय पर कार्यशाला कराने के पश्चात् वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका एवं मोटिवेशनल स्पीकर ब्र.कु. प्राची दीदी को मोमेंटो देकर सम्मानित करते हुए वाइस प्रिंसिपल डॉ. मनीषा शर्मा।



रायपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज के शान्ति सरोवर रिट्रीट सेंटर में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तामासिवनी, आरंग के एन.सी.सी. के सौ से अधिक बच्चे एवं ग्रुप लीडर बलदेव ठाकुर के आने पर आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. अदिति बहन।



बिलासपुर-छ.ग.। साइंस कॉलेज, बिलासपुर के मैदान में आयोजित सात दिवसीय 'स्वदेशी मेला, आत्मनिर्भरता की एक झलक' में ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित 'मेरा बिलासपुर दुर्घटना रहित बिलासपुर एवं मेरा बिलासपुर व्यसन मुक्त बिलासपुर' के संयुक्त जागरूकता स्टाल का उद्घाटन करते हुए केंद्रीय पेट्रोलियम राज्यमंत्री पुरुषोत्तम तेली। इस मौके पर सांसद एवं भाजपा प्रदेश अध्यक्ष अरूण साव, बिलासपुर रेंज के आईजी रतन लाल डांगी, पूर्व मंत्री एवं मस्तूरी विधायक डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी, नेता प्रतिपक्ष नारायण चंदेल, पूर्व मंत्री रामविचार नेताम, रेल्वे ज़ोन के वरिष्ठ अधिकारी नवीन कुमार, बिलासपुर के पूर्व सांसद लखनलाल साहू, बेलतारा विधायक रजनीश सिंह, भारतीय जनता पार्टी संगठन मंत्री पवन साय, वरिष्ठ नेत्र रोग विशेषज्ञ एवं विनायक नेत्रालय के संचालक डॉ. ललित मखीजा, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. स्वाति बहन तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



नरसिंहपुर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज के दिव्य संस्कार भवन सेवाकेन्द्र में दीपावली एवं भाई दूज के उपलक्ष्य में आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए कलेक्टर रोहित सिंह, एसडीएम राजेश शाह, सीएमएचओ ए.के. जैन, जिला समन्वयक जयनारायण शर्मा, जेल अधीक्षक शैफली तिवारी, ब्र.कु. कुसुम बहन तथा अन्य।

ओम शान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न-5, आबू रोड, राज. 307510

सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - 240 रुपये, तीन वर्ष - 720 रुपये, आजीवन - 6000 रुपये

Website: www.omshantimedia.org

For Online Transfer

BANK NAME:- STATE BANK OF INDIA(SBI)
ACCOUNT NAME:- OM SHANTI MEDIA
ACCOUNT NO:- 30826907041, IFSC - CODE - SBIN0010638
BRANCH- Prajapita Brahmakumaris Ishwariya Vishwa Vidhyalya, Shantivan

Note:- After Transfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org

OR
Whatsapp, Telegram No:- 9414172087



SCAN TO PAY
WITH ANY BHIM UPI APP



Merchant Name : RERF Om Shanti Media

vpa : 09000r0076184@barodampay



फ्लाईंग एंजल ➡ लंदन में रहकर सारे विश्व में बाबा ने सेवा करने का सौभाग्य प्रदान किया

मुझे आठ वर्ष की आयु में ही प्रथम बार बाबा से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। बाबा का प्रेम सम्पन्न और रूहानियत भरा चेहरा देखते ही मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि ये मेरे ग्रेंडफादर हैं। फिर हम विदेश चले गए। 1966 में फिर दोबारा भारत में आने पर माउण्ट आबू में आये, तो उस समय बाबा के साथ मुलाकात रही। उस समय मेरी आयु थी 17 वर्ष की। तो उस समय बाबा ने बड़े प्यार से मुझे परमात्मा की याद में दृष्टि देते हुए कहा, बच्चे, तुम रूहानी शिक्षक बनेंगी। तो मुझे तो हिंदी इतनी आती नहीं थी। रूहानी शब्द का अर्थ क्या होता है वो भी मुझे मालूम नहीं था। तो मैं तो चुप रही। परंतु बाबा ने बड़े प्रेम से पालना दी। आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है, वो धीरे-धीरे बाबा

जब मुरली में समझाते रहे तो थोड़ा-थोड़ा कुछ समझ में आया। परंतु बाबा के नयन में कुछ ऐसी ईश्वरीय शक्ति थी कि बाबा जब आत्मा को देखते थे तो जैसे कि नयन के अंदर वो बिल्कुल एक आईने के रूप में आत्मा का पूरा साक्षात्कार हो जाता था कि मेरा आदि स्वरूप, अनादि स्वरूप क्या है। फिर कुछ वर्षों के बाद 1968 में मैं पूना में थी, तो मैंने बाबा को पत्र लिखा कि मैंने अपने जीवन के लिए यही सोचा है कि मुझे ईश्वरीय मार्ग पर ही चलना है। तो बाबा ने टेलीग्राम भेजा कि बच्चे आबू में आ जाओ तो बाबा बैठकर आपसे बात करेंगे। फिर हम जून मास में मधुवन आये। उस समय मेरी आयु 19 वर्ष थी। तो जब बाबा के सामने बैठे झोपड़ी में, तब बाबा ने पूछा, बच्चे, तुमने क्या सोचा है बाबा को बताओ। तो मैंने कहा, मुझे ये ईश्वरीय जीवन अपनानी है, तो

बाबा मुझे देखते रहे और कहा कि बाबा पहले से ही जानते थे। तो उस घड़ी फिर मुझे वो स्मृति आई कि हाँ, कुछ वर्ष पहले ही बाबा ने ऐसे कहा था। जैसे कि बाबा मुझे एक नई जीवन देने के निमित्त बने।



**राजयोगिनी
ब्र.कु. जयंती दीदी,
अति. मुख्य प्रशासिका,
ब्रह्माकुमारीज**

बैकबोन

जैसे मुझ आत्मा को कोई मैग्नेट की तरह आकर्षित करके कहीं बहुत-बहुत दूर एक यात्रा पर

होकर सेवाओं में आगे बढ़ाया

लेकर जा रहे हैं। बाबा की, परमात्मा की याद ऐसी थी जो मुझे भी परमात्मा की याद दिलाकर जैसे कि आत्मा को स्थूल वतन से खींच करके मुझे रोशनी की दुनिया, प्रकाश की दुनिया में ले गये। वहां पर ऐसे अनुभव रहा जैसे कि आत्मा का निराकार शिव परमात्मा के साथ बहुत समय से बिछड़ने के बाद मंगल मिलन हो रहा है। ये अनुभव कितने देर का था ये तो मैं बता नहीं सकती क्योंकि उस समय मैं जैसे कि टाइम और स्पेस से किसी दूसरे वतन में चली गई थी। कुछ समय के बाद लगा कि हाँ, इस स्थूल वतन में आ गये हैं। तो बाबा ने प्रश्न पूछा, किसी का संकल्प तो

नहीं चल रहा कि बाबा इसको दृष्टि क्यों दे रहे हैं? तो फिर ध्यान गया कि बाबा की चारपाई के उस ओर दादी जानकी थीं और वो बहुत सुंदर रीति से अपनी कांध हिला रही थीं। तो वो जानती थीं कि अभी जैसे कि एक नया जन्म आरंभ हुआ। पुरानी दुनिया की समाप्ति और नये जीवन की आरंभ हुई। तब से लेकर फिर ऐसे ही लगा कि बाबा ने मुझे परमात्मा के कार्य के लिए एक नया जन्म दिया और फिर उसमें मुझे कैसे चलना होता, बाबा की मुरलियों के द्वारा वो शिक्षा भी प्राप्त होती रही।

उसके बाद दादी जानकी के साथ मुझे सारे विश्व में, पाँचों खंडों में बाबा ने ईश्वरीय सेवा के लिए कॉन्फ्रेंस, सम्मेलन आदि में भेजा। बाबा की शक्ति, बाबा की पालना और बाबा के डायरेक्शन अनुसार बाबा आज भी सेवा करा



अहमदाबाद-ओधव(गुज.)। माननीय मुख्यमंत्री भूपेंद्रभाई पटेल का गुलाब की माला से स्वागत करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात व प्रसाद देते हुए ब्र.कु. कोकिला बहन।



वाडी-नागपुर(महा.)। इंद्रायणी नगर में ब्रह्माकुमारीज के 'शिवगंगा भवन' का उद्घाटन नागपुर सेवाकेन्द्र की संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. रजनी दीदी के कर कमलों द्वारा संपन्न हुआ। इस अवसर पर नगर परिषद के मुख्याधिकारी विजय देशमुख, वरिष्ठ पुलिस निरीक्षक प्रदीप रायणनावर, क्राइम ब्रांच के डीसीपी गजानन राजमाने, ब्र.कु. मनोहर ठाकरे, ब्र.कु. वैशाली ठाकरे, परतवाडा से ब्र.कु. लता बहन, नागपुर सेवाकेन्द्र की उपसंचालिका ब्र.कु. मनीषा बहन, कामठी सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. प्रेमलता बहन, रामटेक सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. ललिता बहन, सावनेर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुरेखा बहन, वर्धा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. माधुरी बहन, कोराडी सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. उर्मिला बहन, कलमेश्वर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. यशोदा बहन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. दमयंती बहन, स्थानीय सेवाकेन्द्र की उपसंचालिका ब्र.कु. शारदा बहन, जरीपटका सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. निलिमा बहन, ब्र.कु. प्रेमप्रकाश भाई, इंजीनियर प्रकाश तळवेले आदि उपस्थित रहे।



जीरापुर-म.प्र. दीपावली कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए भाजपा मंडल अध्यक्ष विष्णु कुमार सिंह, नगर परिषद उपाध्यक्ष हेमंत जोशी, पार्षद शंभू लाल वर्मा, भाजपा वरिष्ठ नेता रामेश्वर टांक, नगर पालिका पूर्व अध्यक्ष बलराम जी, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. नम्रता बहन तथा अन्य।



रीवा-म.प्र. अखिल भारतीय सर्वोच्च ब्राह्मण महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. विमल दुबे द्वारा समाज सेवा एवं मानवता के कल्याण हेतु ब्रह्माकुमारीज की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. निर्मला दीदी को सम्मानित किया गया। इस सम्मान समारोह में नगर पालिका निगम रीवा के नवनिर्वाचित महापौर अजय मिश्र बाबा, मानस मंडल के अध्यक्ष सुभाष बाबू पांडे, हिंदू उत्सव समिति के आजीवन संरक्षक नारायण डिगवानी, अखिल भारतीय कांग्रेस सेवा दल के राष्ट्रीय महासचिव लालजी प्रसाद मिश्र, एमआईसी मेम्बर धनेंद्र सिंह बघेल, नगर निगम रीवा के मुख्य पार्षदगण, मीडिया के वरिष्ठ पत्रकारगण व अनेक प्रतिष्ठित नागरिक उपस्थित रहे।



मरोली-गुज. श्री लक्ष्मी की चैतन्य झोंकी का उद्घाटन करने के पश्चात् उपस्थित हैं राहुल पटेल, पूर्व तालुका पंचायत अध्यक्ष बीजेपी, बाबू भाई पटेल, व्यापारी तथा ब्र.कु. मुकेश बहन।



राजगढ़-म.प्र. भाई दूज के अवसर पर एसडीएम जूही गर्ग को आत्मिक स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. सुमित्रा बहन।



राजकोट-गुज. हैप्पी विलेज में 'गोल्डन हाउस' के भव्य उद्घाटन एवं प्रभु समर्पित ब्रह्माकुमारी बहनों के 121 माता-पिता के सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी, गुजरात जोन डायरेक्टर राजयोगिनी ब्र.कु. भारती दीदी, ब्र.कु. अमर बहन, माउंट आबू से ब्र.कु. नितिन भाई, ब्र.कु. डॉ. विवेक भाई तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



भुज-गुज. सड़क सुरक्षा बाइक रैली का शुभारंभ करते हुए विनोद भाई सोलंकी, समाज रतन, सतीश भाई, प्रमुख, कच्छ जिला लिग्राइट ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन, नवधन आहिर, प्रमुख, कच्छ जिला ट्रक एसोसिएशन, शैलेंद्र भाई, प्रमुख, लायंस क्लब, ब्र.कु. हर्षा बहन, शिवमणि, ब्र.कु. रीना बहन, ब्र.कु. बाबू भाई, ब्र.कु. शैलेष भाई तथा अन्य।



जबलपुर-म.प्र. जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित सेंटर ऑफ एडवांस्ड फैकल्टी ट्रेनिंग में 'नैचुरल फार्मिंग की चुनौतियां एवं अवसर' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित कर ब्र.कु. वर्षा बहन को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। इस मौके पर ब्र.कु. साधना बहन, डॉ. अरजरिया, सीनियर वैज्ञानिक, कृषि क्षेत्र सहित मृदा के वैज्ञानिक भी उपस्थित रहे।



राजयोगिनी ब्र.कु. उषा, वरिष्ठ
राजयोग प्रशिक्षिका

अविश्वसनीय, अद्भुत किन्तु सत्य : परमात्मा ने सृष्टि पर प्रथम बार आकर स्वयं का परिचय दिया और शब्द उच्चारण किये...

“निजानंद स्वरूपम शिवोहम्...शिवोहम्”,
“प्रकाश स्वरूपम शिवोहम्...शिवोहम्”,
“ज्ञान स्वरूपम शिवोहम्...शिवोहम्”

ब्रह्मा बाबा(दादा लेखराज) को दिव्य साक्षात्कार में पहले विष्णु चतुर्भुज का दिव्य साक्षात्कार हुआ फिर महाविनाश का परिवर्तन का साक्षात्कार हुआ, स्वर्ग का साक्षात्कार हुआ और आत्मा का अनुभव हुआ लेकिन उसके बाद कराची से फिर वह मुम्बई कुछ कार्य अर्थ आये तो मुम्बई में उनका जो मकान था वहाँ सतसंग चल रहा था, आजतक कभी ऐसा नहीं हुआ था कि सतसंग के बीच से उठकर ब्रह्मा बाबा(दादा लेखराज) कहीं गए हों। क्योंकि वो ऐसा करने में गुरु जी का अपमान समझते थे। लेकिन तब अचानक पिताश्री जी को कुछ फील हुआ और वह वहाँ से उठे और उठ करके अपने कमरे में गए जो बहुत ही असाधारण था। उनके बड़े बेटे की बहू भी पीछे-पीछे गई तो उसने जो दृश्य देखा जिसका वर्णन करके वह हमेशा सुनाते थे कि पिताश्री अपने पलंग पर अपनी चारपाई पर अर्ध पद्मासन में बैठे थे और जैसे ध्यान मग्न थे, आँखें बंद थी यह दृश्य देखकर उनकी बहू सामने जाकर बैठ गई। उनको भी पिताश्री जी के व्यक्तित्व में एक आकर्षण महसूस हुआ जो खींची हुई वहाँ जाके नीचे बैठ गई और जैसे ही सामने बैठी तो धीरे-धीरे पिताश्री जी की आँखें जो बंद थी वो खुली और उनकी आँखों से एक तेजोमय लाल प्रकाश जो सारे कमरे को प्रकाशित कर रहा था, इतना प्रकाश था, इतना तेज

था चेहरे पर, उसके बाद जैसे उनके मुख से आकाशवाणी हो रही हो इसी तरह आकाशवाणी हुई कि “निजानंद स्वरूपम शिवोहम्...शिवोहम्”, “प्रकाश स्वरूपम शिवोहम्...शिवोहम्”, “ज्ञान स्वरूपम शिवोहम्...शिवोहम्” और यह तीन महावाक्य उच्चारण होने के बाद धीरे-धीरे पिताश्री जी के नैन बंद हुए और वह प्रकाश जैसे लुप्त हो गया। उसके बाद पिताश्री जी अपनी स्वाभाविक स्थिति में आए और आते ही उनके मुख से यही आवाज निकली कहीं गया वह प्रकाश, कहीं गया वह प्रकाश? बहू ने पूछा पिताश्री जी आपको क्या अनुभव हो रहा है, तब उन्होंने कहा एक बहुत तेजोमय प्रकाश था हजारों सूर्य से तेजोमय प्रकाश और वो प्रकाश मेरे सामने आकर ऐसा महसूस हुआ कि जैसे मेरे भीतर आकर कुछ उच्चारण करके गए तब बहू ने सुनाया कि तीन महावाक्य मैंने सुने आपके मुख कमल से। यह था परमात्मा का सबसे प्रथम अवतरण परकाया प्रवेश एक साधारण मनुष्य तन में और वह परमेश्वर ने अपना परिचय दिया कि “निजानंद स्वरूपम शिवोहम्...शिवोहम्”, “प्रकाश स्वरूपम शिवोहम्...शिवोहम्”, “ज्ञान स्वरूपम शिवोहम्...शिवोहम्”। यह प्रथम अवतरण था और प्रथम परिचय ईश्वर ने अपना दिया उसके बाद पिताश्री जी जैसे कई बार ध्यान मग्न स्थिति में जाने लगे और हर बार वह तेजोमय

प्रकाश कोई न कोई महावाक्य उच्चारण करके जाते थे। जैसे ही परमात्मा का अवतरण होता था तो सारे घर में एक चुम्बकीय आकर्षण फैल जाता था।

हर एक को महसूस होता था कि बाबा के कमरे में कुछ हो रहा है। सभी आकर के सामने बैठ जाते थे और धीरे-धीरे हर रोज़ कोई न कोई महावाक्य उच्चारण होने लगे और इस तरह से सतसंग आरंभ हो

था, किसी को स्वर्ग का साक्षात्कार होता था, किसी को महा परिवर्तन का। ऐसे विभिन्न साक्षात्कार होने लगे और धीरे-धीरे ये आवाज़ समाज में फैलने लगा कि दादा के सतसंग में जो भी जाता है उन्हें बहुत दिव्य अलौकिक अनुभव होता है। धीरे-धीरे समाज के लोग भी आने लगे और वह सतसंग बढ़ता गया। इतने लोग आते रहे लेकिन जहाँ इतने लोग सहजता

परिवार वालों ने रोक लगाना शुरू किया कि कोई जरूरत नहीं है रोज़-रोज़ सतसंग में जाने की। फिर जब वो अनुभव सुनाते थे कि हमें श्रीकृष्ण का दर्शन होने लगा, रोज़ हम श्रीकृष्ण का दर्शन करते हैं। वहाँ के पेपरों में आ गया कि बाबा कोई जादू करते हैं, लोगों को ईश्वर का दर्शन कराते हैं और इस तरह से अपनी तरफ खींच रहे हैं। मीडिया में आ गया, न्यूज़पेपर में आ गया और उसके बाद जब बहुत लोग आने लगे तो नैचुरल है कि जो भी सदस्य सतसंग में आते थे तो परिवार वालों ने उन पर रोक लगाना शुरू कर दिया। विशेषकर मातायें-बहनें ही ज़्यादा आती थीं।

इसीलिए माताओं को रोकना शुरू किया, कन्याओं को रोकना शुरू किया लेकिन परमात्मा ने यह दिव्य कार्य जो आरंभ किया उसमें पिताश्री जी को एक विज्ञान दिया कि नई दुनिया के सृजन के लिये आपको निमित्त बनना है और उस विज्ञान में यह भी बताया कि जिस तरह माँ अपने बच्चे के अंदर अच्छे संस्कारों का सिंचन करती है तो नई दुनिया के लिए भी स्वर्ग की सृष्टि का सृजन करने के लिए माता प्रथम गुरु है। जब वही माता शिव शक्ति बनती है और शिव शक्ति बनकर जो भी भाई-बहनें आते हैं उनके अंदर भी अच्छे संस्कारों का सिंचन करेगी।

1937 में परमात्मा शिव ने परकाया प्रवेश कर अपना परिचय दिया और नये स्वर्णिम दुनिया की नींव रखी। विशेष तौर पर माताओं-बहनों को शिव शक्ति बनाकर निमित्त बनाया। उन्हें सृष्टि चक्र के सम्पूर्ण ज्ञान से अवगत कराकर, सुसंस्कारों से सिंचन कर, सृष्टि परिवर्तन का कार्य आरम्भ कराया।

गया। परिवार वाले ही वो सतसंग करते थे और जैसे ही बैठते थे तो एक दिव्य अलौकिक अनुभव करते थे। धीरे-धीरे अड़ोस-पड़ोस के लोग भी सतसंग में आकर बैठने लगे। और उस सतसंग की विशेषता तो ये थी कि जब पिताश्री ॐ की ध्वनि लगाते थे और उस ॐ की ध्वनि में जो भी सामने बैठे हुये थे वो ध्यान में चले जाते थे। तो तब किसी को विष्णु चतुर्भुज का साक्षात्कार होता था, किसी को श्रीकृष्ण का साक्षात्कार होता

से आते गए फिर धीरे-धीरे परीक्षा का दौर भी शुरू हुआ।

परिवार वालों ने जब यह जाना कि वहाँ जा रहे हैं सतसंग में और उन्हें कोई सूझ-बूझ नहीं रहती है। कब काम खत्म करें और सतसंग में जल्दी जाएं, कब काम खत्म करें जल्दी सतसंग में जाएं क्योंकि उसी सतसंग में तो यह दिव्य अनुभव होता था। इसीलिए सबको आकर्षण होता था। धीरे-धीरे परिवार वालों को जब पता चलने लगा तो



सेम की फली के करिश्माई फायदे

सेम एक प्रकार की लता होती है। जिसकी फलियों को खाने के लिए प्रयोग किया जाता है। सेम की फली में बहुत सारी पौष्टिकताएं होने के कारण आयुर्वेद में सेम को औषधि के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। सेम की प्रत्येक फली में 4-5 बीज होते हैं, जो अंडाकार होती हैं। सेम का सेवन कई तरह से किया जा सकता है, जैसे ज़्यादातर लोग सेम की सब्जी बनाकर खाते हैं।

सेम की फली में कॉपर, आयरन, मैग्नीशियम, फास्फोरस, प्रोटीन, कैल्शियम आदि अनगिनत पौष्टिकताएं होती हैं। सेम मधुर, थोड़ा कड़वा, गर्म तासीर होने के कारण भारी भी होता है। इसके अलावा सेम पेट फूलना, एसिडिटी तथा विष का असर कम करने वाला होता है। सेम के फायदों के आधार पर आयुर्वेद में कैसे औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है और क्या-क्या फायदा होता है जानते हैं-

गले का दर्द दूर करे

मौसम के बदलाव के साथ गले में दर्द, सर्दी-खांसी जैसी बहुत सारी समस्याएं होने लगती हैं। गले के दर्द से आराम पाने में सेम की फली का ऐसे सेवन करने पर आराम मिलता है। 5-10 मिली सेम के पत्ते के रस का सेवन करने से गले का दर्द कम होता है।

दस्त से दिलाए राहत

अगर खान-पान में बदलाव के कारण दस्त हो रहा है तो सेम के बीजों का

काढ़ा बनाकर 10-30 मिली मात्रा में सेवन करने से उल्टी, दस्त, मूत्र संबंधी समस्या एवं पेट के दर्द से लाभ मिलता है।

पेट दर्द से दिलाए आराम

अगर मसालेदार खाना खाने से पेट में गैस हो जाती है, जिसके कारण पेट में दर्द होने लगता है। सेम के पत्तों को पीसकर पेट पर लगाने से पेट का दर्द कम हो जाता है।

पेट फूलने की परेशानी से

दिलाये राहत

अगर अपच के कारण पेट फूलने की समस्या होती है तो उसमें सेम बहुत काम आता है। सेम के बीजों को आग में भूनकर खाने से आध्मान या पेट फूलने की समस्या में लाभ होता है।

अल्सर में फायदेमंद

सेम की फली अल्सर का घाव सूखाने में बहुत काम आती है। राजशिमबी के बीजों को भैंस के दूध में पीसकर शाम के समय अल्सर पर लगाना चाहिए इस तरह लगाने से अल्सर का घाव शीघ्र भर जाता है क्योंकि शाम के समय गर्मी कम होती है।



स्वास्थ्य

कंडू या खुजली की परेशानी करे दूर

कभी-कभी एलर्जी के कारण खुजली की समस्या होती है। सेम के पत्ते के रस को खुजली वाली जगह पर लगाने से परेशानी कम होती है।

बुखार को करे कम

सेम बीजों का काढ़ा बनाकर 15-30

मिली काढ़े में 1 ग्राम सोंठ मिलाकर पीने से ज्वर या बुखार में लाभ होता है।

सूजन में फायदेमंद

सेम बीजों को पीसकर सूजन वाले स्थान पर लगाने से सूजन में जल्दी आराम मिलता है।

कैंसर के इलाज में लाभकारी

एक रिसर्च के अनुसार सेम में एंटी कैंसर गुण होने की वजह से ये कैंसर के लक्षणों को कम करने में मदद करता है।

श्वसन विकार के इलाज में लाभकारी

एक रिसर्च के अनुसार सेम में ऐसे गुण होते हैं जो कि रेस्पिरेटरी यानी श्वसन प्रक्रिया को स्वस्थ बनाये रखने में मदद करता है।

पाचन को स्वस्थ बनाये रखने में मददगार

सेम की फली पाचन संबंधी समस्याओं में भी फायदेमंद होती है। विशेष रूप से डायरिया में क्योंकि रिसर्च के अनुसार सेम में एंस्ट्रिजेंट यानी कषाय का गुण होता है जो कि डायरिया जैसी

समस्याओं को दूर कर पाचन को स्वस्थ बनाये रखने में मदद करता है।

सेम की फली के उपयोगी भाग

आयुर्वेद में सेम की फली, बीज तथा पत्ते का इस्तेमाल सबसे ज़्यादा किया जाता है।

सेम की फली का सेवन कैसे करें

बीमारी के लिए सेम के सेवन और इस्तेमाल का तरीका पहले ही बताया गया है। इसके अलावा आप सेम की सब्जी बनाकर इसका सेवन कर सकते हैं। अगर आप किसी खास बीमारी के इलाज के लिए सेम का उपयोग कर रहे हैं तो आयुर्वेद चिकित्सक की सलाह जरूर लें। चिकित्सक के परामर्श के अनुसार -
15-30 मिली काढ़ा
5-10 मिली रस का प्रयोग कर सकते हैं।

सेम की फली कहाँ पाई और उगाई जाती है

समस्त भारत में इसकी खेती की जाती है तथा इसकी फलियों का प्रयोग साग के रूप में किया जाता है।



मुम्बई-मुलुंड। इंटरनेशनल ओपन यूनिवर्सिटी ऑफ ह्यूमैनिटी हेल्थ, साइंस एंड पोस, कैलिफोर्निया, अमेरिका द्वारा होटल साउथ एवेन्यू, तुकोगंज, इंदौर, मध्य प्रदेश में आयोजित कार्यक्रम में कोरोना काल में लोगों की आध्यात्मिक सेवा के लिए ब्रह्माकुमारीज मुलुंड सबजोन की ब्र.कु. लाजवती बहन, ब्र.कु. सरला बहन तथा ब्र.कु. मीरा बहन को 'डॉक्टरेट ऑफ फिलॉसफी' की डिग्री से सम्मानित किया गया। इस मौके पर महाराष्ट्र के मेम्बर ऑफ लेजिस्लेटिव काउंसिल महादेव जनकार तथा अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।



गांधीनगर-गुज.। राजभवन, गांधीनगर में गांधी जयंती के अवसर पर माननीय राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात कर गुलदस्ता भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. कैलाश बहन। साथ में मणिनगर सबजोन प्रभारी ब्र.कु. नेहा बहन, चिलोडा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.तारा बहन, ऊर्जानगर सेवाकेन्द्र प्रभारी रंजन बहन तथा केपिटल ऑफसेट्स एवं केपिटल वर्तमान अखबार के मालिक रमेश पटेल उपस्थित रहे।



हैदराबाद-तेलंगाना। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' थीम के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज के मेडिकल विंग द्वारा कोविड-19 में सेवारत डॉक्टर्स, नर्सों एवं हॉस्पिटल स्टाफ के लिए ओसमानिया हॉस्पिटल में आयोजित सम्मान समारोह में मेडल एवं सर्टिफिकेट भेंट कर सम्मानित करते हुए माउंट आबू से मेडिकल विंग के सचिव राजयोगी ब्र.कु.डॉ. बनारसी लाल शाह तथा स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. उमा बहन।



लखर-ग्वालियर(म.प्र.)। राठौर समाज के द्वारा राम जानकी मंदिर में आयोजित भजन संध्या कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज लखर की मुख्य संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. आदर्श बहन, अनूप मिश्रा, पूर्व सांसद, मुराना, प्रवीण पाठक, विधायक, दक्षिण ग्वालियर, किशन मुद्गल, वरिष्ठ भाजपा नेता, हरिपाल जी, पार्षद वार्ड 48 एवं नेता प्रतिपक्ष, सतीश बोहरे, वार्ड 49, धर्मेन्द्र जैन, पार्षद वार्ड 51, जीतेंद्र मुद्गल, पार्षद वार्ड 47, नवीन पारंडे, पार्षद वार्ड 44, राठौर समाज से अध्यक्ष दिनेश राठौर, राकेश राठौर, हरचरण राठौर सहित अनेकानेक राठौर समाज के लोग उपस्थित रहे।



नवी मुम्बई-वाशी। ब्रह्माकुमारीज के आत्मचिंतन भवन में आने पर ज्ञानचर्चा के पश्चात् पीठाधीश श्री महंत जन्मेजय शरण महाराज को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. शीला दीदी, ब्र.कु. शुभांगी बहन, ब्र.कु. मीरा बहन तथा अन्य मेहमान।



कटनी-सिविल लाइन(म.प्र.)। एस.पी. ऑफिस पुलिस कंट्रोल रूम में प्रधान आरक्षकों के इंडक्शन कोर्स के अंतर्गत 'तनाव मुक्ति शिविर' कराने के पश्चात् उपस्थित हैं ब्र.कु. लक्ष्मी बहन व ब्र.कु. भाई।



अलीराजपुर-म.प्र.। राजपूत धर्मशाला में 'साइलेंस शक्ति द्वारा शारीरिक व मानसिक रोगों व समस्याओं पर विजय' विषय पर संबोधित करते हुए इंदौर से आये 'जीवन जीने की कला के प्रणेता ब्र.कु. नारायण भाई। इस मौके पर उमेश वर्मा, मुख्य न्यायाधीश मजिस्ट्रेट रीडर, समाज के नटवर सिंह सिसोदिया, ब्र.कु. ज्योति बहन, अरविंद गहलोत, भैरू सिंह चौहान, सीताराम राठौर, बाबूलाल चौहान, आशा सिसोदिया, राजेश चंदेल राजपूत समाज के अध्यक्ष, अरूण गहलोत तथा अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।



विदिशा ए33-मुखर्जी नगर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा राष्ट्रीय पत्रकारिता दिवस पर अजय जैन, नवदुनिया ब्यूरो चीफ, अजय तिवारी दैनिक भास्कर ब्यूरो चीफ तथा गोविन्द सक्सेना पत्रिका ब्यूरो चीफ आदि पत्रकार बंधुओं को सम्मानित करते हुए ब्र.कु. रेखा बहन एवं ब्र.कु. रुक्मिणी बहन।

मेरे साथ ऐसा क्यों हो रहा है इसका जवाब मेरे पास

यह ज्यादा लकी है वह कम लकी ऐसा कोई कॉन्सेप्ट नहीं है। वह लकी कौन डिसाइड करता है? कौन-सी एनर्जी मैंने यहाँ से भेजी थी। उदाहरण के तौर पर एक बॉल लेकर उसे दीवार पर मारा 'लॉ ऑफ साइंस' कि बॉल वापस आती है। नियम के आधार पर उसी तरह किया हुआ कर्म और भेजी हुई एनर्जी वापस आती है। जब वापस आ रही है, वापस आने वाली एनर्जी पर मेरा कोई कंट्रोल नहीं है। मतलब सामने से जो कुछ आ रहा है उस पर मेरा कोई कंट्रोल नहीं है, लेकिन जब सामने से कोई कुछ करता है और हम रेस्पॉन्ड करते हैं वह हमारा नया कर्म होता है। अगर अब कोई मेरे से गलत व्यवहार कर भी रहा है, कोई मेरे जीवन में विघ्न डाल भी रहा है। कुछ भी कर रहा है सबसे पहले मेरे मन को यह नहीं कहना चाहिए यह मेरे साथ ऐसा क्यों कर रहे हैं? मेरे पास यह एनर्जी क्यों आ रही है? कोई भी एनर्जी ऐसे ही आ नहीं सकती, जब तक डायरेक्शन में न हो। तो यह एनर्जी मेरे पास क्यों आ रही है क्योंकि मैंने कभी ना कभी भेजी थी मुझे याद नहीं कब भेजी थी, लेकिन एनर्जी जब तक ऐसे जाएगी नहीं तब तक ऐसे आएगी नहीं। यह लॉ ऑफ कर्म है। जैसे लॉ ऑफ ग्रेविटी हमेशा वर्क करता है। तो मैंने पीछे भी अज्ञानवश एनर्जी भेजी थी वही एनर्जी मेरे पास सामने से आ रही है। भल सामने वाले के व्यवहार के रूप में आ रही है, अब मैं उनको चेंज कर नहीं सकती। लेकिन मुझे अब उनके बारे में कैसा सोचना है, फील करना है, बात करना है, वो मेरा नया कर्म है। तो एक ही समय पर तीन एनर्जी साथ-साथ काम करती है, यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है। तीन काल साथ-साथ काम करते हैं। पास्ट, प्रेजेंट, फ्यूचर। जो मैं कर्म कर चुकी हूँ वो पास्ट मेरे सामने आ जाता है। तो पास्ट मेरे सामने तब आता है जो मैं अभी कर्म क्रियेट करूँगी। अब मैंने कौन-से कर्म क्रियेट किए वो फ्यूचर बनेगा और फिर वह पास्ट बनकर मेरे सामने आयेंगे। ये समझना कितना इजी है। लोगों के साथ व्यवहारिक अकाउंट बहुत सॉफ्ट रखना है। हम छोटी-छोटी गफलत करते रहते हैं ना, किसी के बारे में कुछ बोलना, किसी का कुछ बोलना, किसी ने ऐसे कर दिया, किसी का वह कर दिया वो सारी एनर्जी है जो हम फेंक रहे हैं, फिर हम कहते हैं मैंने किसी के साथ गलत नहीं किया तो मेरे जीवन में ऐसा क्यों हो रहा है? ऐसा हो नहीं सकता कि हमने कुछ किया हो और वो हमारे पास वापिस न आये। इट इस लॉ। लॉ ऑफ



ब्र.कु. शिवानी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

ग्रेविटी की तरह। जब तक ऐसे एनर्जी जाएगी नहीं तब तक एनर्जी ऐसे आएगी नहीं।

अब क्या हम अपने कर्म और संस्कार पर अटेंशन रख सकते हैं? इजी है? इसलिए नहीं कि दूसरों का भला करना है इसलिए क्योंकि अपने ऊपर रहम करना है। कम्पेशन(करुणा) दूसरों पर तब होगी जब पहले अपने ऊपर रहम करेंगे। परमात्मा कहते हैं अपने संस्कार और कर्म श्रेष्ठ बनाओ। इतना रहम करो खुद पर कि सृष्टि स्वर्ग बन जाये। सृष्टि स्वर्ग बन जायेगी तो गुस्सा करना, निराश होना, उदास होना यह मेरा कर्म बिगड़ रहा

कोई भी एनर्जी ऐसे ही आ नहीं सकती, जब तक डायरेक्शन में न हो। तो यह एनर्जी मेरे पास क्यों आ रही है क्योंकि मैंने कभी ना कभी भेजी थी मुझे याद नहीं कब भेजी थी, लेकिन एनर्जी जब तक ऐसे जाएगी नहीं तब तक ऐसे आएगी नहीं।

है। तो अब सामने से कोई भी एनर्जी आये 10 सेकंड के लिए अपनी आँखें बन्द करें किसी एक व्यक्ति को देखें, क्योंकि मुझे अच्छी एनर्जी नहीं भेज रहा है। वो घर में हो सकता है अच्छी एनर्जी मतलब कोई तंग कर रहा हो, कोई प्रॉब्लम डाल रहा है, कोई विघ्न डाल रहा है, कुछ ठीक से बिहेवियर नहीं कर रहा कुछ भी हो सकता है। उसे सामने ले आना, फिर कोई भी हो सकता है फैमिली मेम्बर भी हो सकता है। स्ट्रॉंग कार्मिक अकाउंट सबसे ज्यादा तो फैमिली में होता है। फिर मेरा मन कहता मेरा भाई ऐसा क्यों कर रहा है? मेरा बच्चा ऐसा क्यों कर रहा है? यह तो सिर्फ एक रोल है। वह आत्मा है, जो कार्मिक अकाउंट होता है वह किसके बीच होता है? आत्मा के बीच होता है। मैं

आत्मा आज शरीर में हूँ, मैं आपके साथ कुछ गलत व्यवहार करती हूँ, आज मेरा शरीर चेंज हो गया, मैं दूसरे शरीर में चली गई। थोड़े साल बाद आपका भी शरीर चेंज हो गया, आप भी दूसरे शरीर में चले गए, लेकिन हम फिर जरूर मिलेंगे। याद करो, जिस दिन शादी हुई थी पंडित जी ने कहा था कि पहली बार नहीं मिल रहे, सात जन्म एक ऐसे युग में जब एक होते हैं कुछ तो मीनिंग है ना! उसका मीनिंग है हसबैंड एंड वाइफ इतना स्ट्रॉंग कार्मिक अकाउंट होता है कि यह एक जीवन काल का कार्मिक अकाउंट नहीं होता, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम हसबैंड वाइफ-हसबैंड वाइफ बनते रहते हैं। सात जन्म अकाउंट के अंदर आते जरूर हैं, बहुत-बहुत बार आते हैं। इसीलिए अब इस जन्म में हम इतने स्ट्रॉंग कार्मिक अकाउंट में आए हैं। कार्मिक अकाउंट सिर्फ हसबैंड और वाइफ के रिश्ते के बीच नहीं होता, वह हर रिश्ते के बीच होता है। इसलिए जिसको भी देखो आपको लगता है, मेरे साथ ऐसे क्यों? शायद पिछली बार मेरी तरफ से कोई गड़बड़ हुई है। मतलब पिछली बार मैंने दूसरा कुछ भेज दिया अब वहाँ से आ रहा है तो मुझे दुःख हो रहा है, लेकिन पॉवर अब मेरे पास है। अगर उनके व्यवहार को देखकर, उस गलती को देखकर मैं और दुःखी हो गई तो मेरा फिर प्रेजेंट कर्म भी कौन-सा चला जाएगा पिछली बार निगेटिव था, निगेटिव आ रहा है, फिर से निगेटिव हो जायेगा। ऐसे मोड़ पर हमें उसे सॉरी करना है या उस आत्मा को मेडिटेशन मतलब हमें वायब्रेशन देकर सॉरी बोलना है। जो हमारे जीवन में विघ्न डाल रही है। जो हम दोनों के बीच में क्रिएट हो गई है उसको हमें रीयलाइज करना है। आज से मेरी

तरफ से आपके लिए सिर्फ और सिर्फ सॉरी। लेकिन जन्म-जन्म के साइकल में पता नहीं किस-किस को दुःख देकर आए हैं, तो एक सेकंड के लिए सुबह कहो कि सारे जिनके साथ मैंने इंटरैक्ट(बातचीत) किया है अनेक जन्मों में, उन सब को मैंने जो गलतियाँ की थी उसके लिए सॉरी। ताकि हम जब अगली बार मिलेंगे हमारा कार्मिक अकाउंट बहुत बढ़िया रहेगा।

इस तरह हमें पास्ट के किए हुए कर्म को क्लीयर भी करना है और क्लीन भी करना है। हमें थोड़ा अटेन्शन रखना है, हमारे साथ जो भी हो रहा है या सामने से आ रहा है उसे सही अर्थ में समझ कर उसका रेस्पॉन्ड करना है न कि कर्म को और उलझाना है।



राजगढ़-म.प्र.। भाई दूज के अवसर पर संयुक्त कलेक्टर कमलचंद नागर को आत्मिक स्मृति का तिलक लगाने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुरेखा बहन।



इंदौर-गंगोत्री विहार(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज के ज्ञानदीप भवन में आयोजित दीपावली कार्यक्रम के दौरान पार्षद निरंजन चौहान को भाई दूज का तिलक देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सीमा बहन।



गोपाल नगर-कटनी(म.प्र.)। कलेक्टर प्रियंक मिश्रा को दीपावली की बधाई देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सृष्टि बहन।

परमात्म ऊर्जा

कथा सरिता



के पास जाकर उनसे झूठ कहेंगे और एग्जाम बाद में कभी दे देंगे।

पार्टी करने के बाद दूसरे ही दिन चारों

में गए थे। शादी से घर लौटते समय हमारी गाड़ी का टायर पंकचर हो गया। गाड़ी में ज्यादा टायर नहीं था इसलिए हमें गाड़ी को धक्का मारते-मारते घर तक लाना पड़ा। हम कल रात इतना थक गए थे कि आज एग्जाम देने के हालात में नहीं हैं। तो क्या हम बाद में एग्जाम दे सकते हैं? “टीचर ने उनकी बात सुनी और उनसे कहा, “तुम एग्जाम कल दे सकते हो।” चारों ये सुनकर बहुत ही खुश हो गए। और घर जाकर पढ़ाई करने लगे। दूसरे दिन चारों एग्जाम देने पहुंचे। टीचर ने उन्हें अलग-अलग क्लासरूम में बिठाया। क्वेश्चन पेपर में 2 ही प्रश्न थे। पहला तुम्हारा नाम क्या है और दूसरा, गाड़ी का कौन-सा टायर पंकचर हो गया था? चारों ने झूठ कहा था इसीलिए चारों के उत्तर अलग-अलग थे। इस प्रकार से टीचर ने उनका झूठ पकड़ लिया।

शिक्षा : अपनी पढ़ाई को गंभीरता से लें, कभी झूठ न बोलें, अपने शिक्षकों का सम्मान करें।

झूठ बोलना माना अविश्वसनीय बनना



के पहले दिन भी वो पार्टी कर रहे थे। और इसीलिए उन्होंने सोचा कि वो टीचर

टीचर के पास गए और टीचर से झूठ बोलने लगे कि कल रात हम एक शादी

अगर कोई बड़े के हाथ में हाथ होता है तो छोटे की स्थिति बेफिक्र होती, निश्चित रहती है। तो समझना चाहिए - हर कर्म में बापदादा मेरे साथ भी है और हमारे इस अलौकिक जीवन का हाथ उनके हाथ में है अर्थात् जीवन उनके हवाले है। जिम्मेवारी उनकी हो जाती है। सभी बोझ बाप के ऊपर रख अपने को हल्का कर देना चाहिए। बोझ ही न होगा तो कुछ मुश्किल लगेगा? बोझ उतारने व मुश्किल को सहज करने का साधन है- बाप का हाथ और साथ। यह तो सहज है ना! फिर चाहे बाप स्मृति में आये, चाहे दादा स्मृति में आये। बाप की स्मृति आयेगी तो साथ में दादा की भी रहेगी ही। दादा की स्मृति से बाप की स्मृति भी रहेगी। अलग नहीं हो सकते। अगर साकार स्नेही बन जाते हो, तो भी और सभी से बुद्धि टूट जायेगी ना! साकार स्नेही बनना भी कम बात नहीं। साकार स्नेह भी सर्व स्नेह से, संबंधों से बुद्धियोग तोड़ देता है। तो अनेक तरफ से तोड़ एक तरफ

जोड़ने का साधन तो है ना! साकार से निराकार तरफ याद आयेगा। साकार से स्नेह भी तब पैदा हुआ ना जब बाप, दादा दोनों का साथ हुआ। अगर बाप, दादा का साथ न होता तो साकार इतना प्रिय थोड़े ही होता। जैसे बाप, दादा दोनों साथ-साथ हैं वैसे आपकी याद भी साथ-साथ हो जायेगी। ऐसे कभी नहीं समझना कि मुश्किल है। सहज योगी बनो। मुश्किल योगी तो द्वापर से लेकर बनते आये। हठयोगियों को तो आप कट करते हो ना! आप भी सहज योगी न बने और फिर मुश्किल कहा, तो एक ही बात हो गई। सहजयोगी बनना है। यथार्थ याद है, निरन्तर सहजयोगी हो। सिर्फ अपनी स्टेज को बीच-बीच में पॉवरफुल बनाते जाओ। स्टेज पर हो, सिर्फ समय प्रति समय इस याद की स्टेज को पॉवरफुल बनाने के लिए अटेन्शन का फोर्स भरते हो। उतरती कला अब समाप्त हुई ना, व अभी भी है? तब तो चढ़ती कला में आ गये हो ना!



रतलाम-डोंगरे नगर(म.प्र.)। दीपावली पर्व पर सजाई गई श्री लक्ष्मी की चैतन्य झाँकी के मध्य दीप प्रज्वलित करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सविता बहन, ब्र.कु. गीता बहन, समाजसेवी राजेंद्र पोरवाल तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।



डोभी-नरसिंहपुर(म.प्र.)। विधायक संजय शर्मा को दीपावली की शुभकामनाएं देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रीति बहन।



छतरपुर-किशोर सागर(म.प्र.)। 'आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' थीम के अंतर्गत आयोजित 'जीवन का आधार गीता का सार' विषयक कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप से कर्नाटक से आई राजयोगिनी ब्र.कु. वीणा बहन, वरिष्ठ पत्रकार सुरेंद्र अग्रवाल, मुनीलाल टेकेदार, एडवोकेट संजय मिश्रा, अकाउंट प्रोजेक्ट ऑफिसर राजेश रूपालिया, भोपाल से सरिता बहन महेंद्र भाई, छतरपुर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शैलजा बहन तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



अलीराजपुर-म.प्र.। दीपा की चौकी पर स्थित ब्रह्माकुमारीज सभागृह में नगरवासी व मध्यप्रदेश राज्य के विभिन्न स्थानों से आए हुए इंडक्शन ट्रेनिंग कोर्स के कॉन्स्टेबल्स को संबोधित करने के पश्चात् समूह चित्र में मुख्य वक्ता इंदौर से आये 'जीवन जीने की कला' के प्रणेता ब्र.कु. नारायण भाई, ब्र.कु. प्रतिभा बहन, ट्रेनर सीताराम, अमर सिंह, विषाप कॉन्स्टेबल तथा अन्य।



सूरत-कतारगाम(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज सर्कल(स्तंभ) का ओ.आर.सी. गुरुग्राम की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी के वरद हस्तों द्वारा विधिपूर्वक उद्घाटन हुआ। इस मौके पर बड़ी संख्या में स्थानीय ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।



अटलादरा-वडोदरा(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा रिलायन्स मॉल के सामने, ओल्ड पादरा रोड पर आयोजित त्रिदिवसीय 'श्रीमद् भगवद्गीता का व्यवहारिक स्वरूप, सकारात्मक जीवन शैली और परमात्म अनुभूति शिविर' का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए राजमाता शुभांगिनी राजे गायकवाड, गायकवाड परिवार, विजय कुमार श्रीवास्तव, वाइस चांसलर, एमएसयू, शिवलाल गोयल, एम.डी., कच्छ केमिकल लिमिटेड, शिवन्दर चावला, रेडन हार्ट टेक्नीक नितिन ठक्कर, जगदीश फूड्स प्रा.लि., डॉ. भरत मोदी, वेल्केर हॉस्पिटल, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी, माउंट आबू, ब्र.कु. राज दीदी, सेवाकेन्द्र संचालिका, मंगलवाड़ी सबजोन, ब्र.कु. अरुणा बहन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. पूनम बहन, सह संचालिका, स्थानीय सेवाकेन्द्र तथा अन्य। कार्यक्रम में प्रतिदिन लगभग 2000 भाई-बहनों ने भाग लिया।

...तुम वही हो जाओ ...जो तुम होने को आये हो

जिस दिन हर घड़ी उसी का अनुभव होने लगे कि वही द्वार पर खड़ा है, वही सामने है, वही मेरा है, वही बाहें पसार कर अपना बनाने लिये आया है, उस क्षण फूल खुल जाता है। वही अनुग्रह है, उत्सव है, अहोभाव है। जब तक तुम वही न हो जाओ, जो तुम होने को आये हो, तब तक संतोष असंभव है। स्वयं सम्पन्न, सम्पूर्ण नहीं बने हैं, तब तक संतुष्टता हो नहीं सकती। स्वयं हो कर ही मिलता है परितोष।

जीवन जैसे-जैसे थोड़ा झुकेगा, वैसे-वैसे अहंकार थोड़ा-थोड़ा गलेगा। वैसे-वैसे अंधेरी रात में भी उसकी बिजलियां कौंधनी शुरू हो जाती हैं। आप झुके नहीं, कि उसका आना शुरू हुआ नहीं! उसका खुला आकाश सदा से ही मुक्त है।

परमात्मा दूर नहीं है, आप अकड़ खड़े हो, आपकी अकड़ ही दूरी है। आपका झुक जाना ही निकटता हो जाएगी। वैसे शास्त्रों में भी कहते हैं, परमात्मा दूर से दूर और पास से पास है। दूर, जब आप अकड़ जाते हो, दूर, जब आप कहते हो कि मैं ही हूँ, तू नहीं है। पास, जब आप कहते हो, तू ही है, मैं नहीं हूँ। जब आप आँख खोलते हो, जब आप अपने पात्र को, अपने हृदय के पात्र को... उसके सामने फैला देते हो तब आप भर जाते हो हज़ारों-हज़ारों-खज़ानों से।

प्रभु तो रोज ही आ सकता है, आता ही है। उसके अतिरिक्त और कौन आयेगा अपने बच्चों के पास! जब आप नहीं पहचानते, तब भी वही आता है। जब आप पहचान लेते हो, धन्य भाग्य। जब आप नहीं पहचानते, तब भी उसके अतिरिक्त न कोई आया है और न कभी आयेगा। वही आता है, ये निश्चय अपने में बिठाना, क्योंकि सभी की शक्तें उन्होंने ही बनाई है। सभी उसकी ही रचना है। सभी को उसने ही बनाया है। सभी को अपने नयन कमलों से सशक्त कर भरपूर किया है। तो अगर कभी एक बार ऐसी प्रतीति हो कि आगमन हुआ है, तो उस प्रतीति को गहराना, सम्भालना, उस प्रतीति को साधना, सुरित बनाना, फिर और धीरे-धीरे कोशिश करो और उस प्राप्त प्रेम को पहचानो, बांटो।

और उसी भाव से सब को देखने का यत्न करो।

पौराणिक कहावत है, अतिथि देवता है। अर्थ है कि जो भी आये, उसमें परमात्मा को पहचानने की चेष्टा जारी रखनी चाहिए। मतलब कि वो परमात्मा का बच्चा है, परमात्मा ने इसको गढ़ा है, उस आत्मिक भाव से देखना है। चाहे हज़ार बाधाएं आएँ, चाहे कठिनाइयाँ आये, चाहे कितनी भी गालियाँ खानी पड़े, चाहे कितनी भी मुश्किलाँ आये,

की हालत और कली तभी फूल हो सकती है, जब अनंत(परमात्मा) के पदचाप उसे सुनाई पड़ने लगे। आप अपने से फूल न हो सकोगे। सुबह जब सूरज उगता है, और सूरज की किरणें नाच उठती हैं आकर कली की निकटता में, सामिप्य में... कली के ऊपर... जब सूरज की किरणों के हल्के-हल्के पद कली पर पड़ते हैं तो कली खिलती है, फूल बनती है। जब तक आपके ऊपर परमात्मा की किरणें न पड़ने लगे, उसके स्वर

हो जाओ, जो तुम होने को आये हो, तब तक संतोष असंभव है। स्वयं सम्पन्न, सम्पूर्ण नहीं बने हैं, तब तक संतुष्टता हो नहीं सकती। स्वयं हो कर ही मिलता है परितोष।

तो सुनो प्रभु के पदचाप, जहाँ से भी सुनाई पड़ जायें और धीरे-धीरे सब तरफ से सुनाई पड़ने लगे। जिस दिन हर घड़ी उसी का अनुभव होने लगे कि वही द्वार पर खड़ा है, वही सामने है, वही मेरा है, वही बाहें पसार कर अपना बनाने लिये आया है, उस क्षण

पता नहीं क्यों आये थे, क्यों भेजे गये थे, कुछ प्रतीति न हुई। गीत अनगाया रह गया, फूल अनखिला रह गया।

सुनो उसकी आवाज़ और सभी आवाज़ें उसी की हैं, सुनने की कला चाहिए। गुनो उसे, क्योंकि सभी को उसने ही बनाया है, गुनने की कला चाहिए। जागते, सोते, उठते, बैठते एक ही स्मरण रहे कि आप परमात्मा से घिरे हुए हो। परमात्म शक्तियों का सुरक्षा कवच आपके चारों ओर है। शुरु-शुरु में चूक जायेगा, भूल जायेगा, विस्मृति हो जायेगी, पर अगर आप धागे को पकड़ते ही रहे तो जैसा महान आत्मार्थ कहती हैं, आप फूलों के ढेर न रह जाओगे, वही श्रुति का धागा तुम्हारे फूलों की माला बना देगा। जिस दिन आपकी माला तैयार है, वह खुद ही झुक जाता है, वह अपनी गर्दन तुम्हारी माला में डाल देता है। क्योंकि उस तक, उसके सिर तक आपके हाथ तो न पहुँच पायेंगे, बस हमारी माला तैयार हो, वह खुद हम तक पहुँच जाते हैं। मनुष्य कभी परमात्मा तक नहीं पहुँचता। जब भी मनुष्य तैयार होता है, उसमें देवत्व निखरता है, परमात्मा उसके पास आता है।

हे कलियाँ, जो तुम होने आये हो, जो तुम होना चाहते हो, जो तुम हो, उसे उघाड़ना है, परमात्मा को प्रेम के धागे में अपने इर्द-गिर्द पाना है। यही समय है आत्म और परमात्म मिलन का। उस वक्त को, उस क्षण को पकड़ लेना है। जब जान ही गये हो, समझ भी लिया है, वो हमारे लिए आया है, हमें सम्पन्न बना रहा है, खज़ानों को खोल दिया है और कहता है कि खज़ानों को लुटाओ। जो मेरे पास है, वो आपका है, मैं ही आपका पिता हूँ, आप ही मेरे बच्चे हो, आपका ही इस पर अधिकार है, ऐसी ऑफर भला कौन करेगा! क्यों रुके हुए हो, क्यों अभी भी औरों की तरफ झाँकते हो? अब जो चाहिए था, वो सुंदर दृश्य हमारे साथ घटित हो रहा है, उसका लाभ उठाओ। यही परमात्मा पिता की आश है, नया साल, नया वर्ष, इन खज़ानों के साथ आपका बीते। आपका चेहरा हमेशा खिला हुआ रहे, सुकून भरा रहे, औरों को भी सुकून देता रहे, यही मंगलकामना है।



तब भी आपको समझना है कि वो वही है। दोस्त में तो दिखाई पड़ेगा ही, लेकिन शत्रु भी दिखाई पड़े। अपनों में तो दिखाई पड़ेगा ही, लेकिन परायों में भी दिखाई पड़े। रात के अंधेरे में ही नहीं, और जितने पदचाप आपको उसके सुनाई पड़ने लगे, उतनी ही पंखुड़ियाँ आपकी खुलने लगेंगी।

चमन में फूल खिलते तो सभी ने देख लिए, सिसकते गुँचे(फूल की कली) की हालत किसी को क्या मालूम! रोती हुई कली

आकर आघात न करने लगे, तब तक आप कली की तरह ही रहोगे। कली की पीड़ा यही है कि खिल नहीं पाई। जो हो सकता था, वो नहीं हो पाया। नियती पूरी न हो, यही संताप है, यही दुःख है। आज आदमी की पीड़ा यही है कि वह जो होने आया है, नहीं हो पा रहा है। लाख उपाय कर रहा है, गलत, सही, दोड़-धूप कर रहा है, लेकिन पता है, समय बीतता जाता है और जो होने को मैं आया हूँ वो नहीं हो पा रहा हूँ। जब तक तुम वही न

फूल खुल जाता है। वही अनुग्रह है, उत्सव है, अहोभाव है। परमात्मा को मालूम है आपकी हालत के बारे में। जब आप होते हो सब तरफ, कहीं सुराग नहीं मिलता। टटोलते हो सब तरफ और चिराग नहीं मिलता।

जिंदगी प्रतिपल बीतती चली जाती है, हाथ से प्रत्येक क्षण खिसकते चले जाते हैं, जीवन की धार वहीं चली जाती है- यही आई मौत, जीवन गया-और कुछ हो न पाये। पता नहीं क्या लेकर आये थे, समझ में नहीं आया,



नीमच-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज द्वारा नवनिर्वाचित नगरपालिका के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष व पार्षदों सहित नगर के प्रमुख गणमान्य नागरिकों एवं संपादकों व वरिष्ठ पत्रकारों के लिए आयोजित स्नेह मिलन व सम्मान समारोह में नगर पालिका अध्यक्ष स्वाति चोपड़ा, उपाध्यक्ष रंजना परमाल, भाजपा जिलाध्यक्ष पवन पाटीदार, पूर्व विधायक नन्दकिशोर पटेल, राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त उद्योगपति डी.एस.चौराडिया, भाजपा के वरिष्ठ नेता संतोष चोपड़ा, नई विद्या अखबार के मालिक प्रकाश मानव, समाजसेवी जम्बू कुमार जैन, डॉ. प्रदीप गिल, संस्थान के सबजोन निदेशक ब्र.कु. सुरेंद्र भाई, सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. सविता बहन, ब्र.कु. श्रुति बहन व अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



कलमखार-धारणी(महा.)। सेवाकेन्द्र पर आयोजित सात दिवसीय गीता ज्ञान यज्ञ के उद्घाटन अवसर पर ईश्वरीय ज्ञान सुनाते हुए ब्र.कु. नेहा बहन। साथ हैं धारणी सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.लता बहन, ब्र.कु.भारती बहन, ब्र.कु.अविनाश भाई तथा अन्य।



इंदौर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज के इंदौर ज़ोन के संस्थापक एवं पूर्व क्षेत्रीय निदेशक ब्र.कु. ओमप्रकाश भाई जी के 7वें पुण्य स्मृति दिवस पर ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश भाईजी सभागार ज्ञानशिविर में डॉ. अग्रवाल आई हॉस्पिटल के सहयोग से आयोजित निःशुल्क नेत्र परीक्षण शिविर का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए डॉ. अग्रवाल आई हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. अमित सोलंकी, मेक रेटिना सेंटर के डायरेक्टर डॉ. प्रतीक महाजन, स्कूल ऑफ एक्सीलेंस फॉर आई. के मेडिकल सुपरिटेण्डेंट डॉ. डी.के. शर्मा, डॉ. अग्रवाल हॉस्पिटल के वाइस प्रेसिडेंट डॉ. गणेश सुब्रमण्यम, शेल्वी हॉस्पिटल के डॉ. शिल्पा देसाई, ब्रह्माकुमारीज इंदौर ज़ोन की मुख्य क्षेत्रीय समन्वयक ब्र.कु. हेमलता दीदी, मेडिकल विंग की ज़ोनल कोऑर्डिनेटर ब्र.कु.उषा बहन तथा अन्य।



गवालियर-माधौगंज(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज के मीडिया प्रभाग द्वारा 'आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' थीम के अंतर्गत प्रभु उपहार भवन सेवाकेन्द्र पर 'समाधान पत्रकारिता से समृद्ध भारत की ओर' विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया। जिसमें वरिष्ठ पत्रकार एवं समाजसेवी केशव पांडे, वरिष्ठ पत्रकार सुरेश डंडोटिया, मधुबन न्यूज के मुख्य संपादक ब्र.कु. कोमल भाई,माउण्ट आबू, ब्र.कु. तुलसी बहन, लश्कर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. आदर्श बहन, ब्र.कु. प्रहलाद भाई, ब्र.कु. वेंकटेश भाई आदि उपस्थित रहे।

शरीर की स्वस्थ स्थिति हमारे विचारों का एक तरह से दर्पण है। जितना शरीर हमारा स्वस्थ है उतने हमारे विचार अच्छे चल रहे हैं। लेकिन बहुत सारी ऐसी बातें जो हमारे विचारों में है और उनसे बहुत बड़ी-बड़ी बीमारियाँ हमारे शरीर में पैदा होती हैं, उसका कारण हमको जानना चाहिए। आज एक ऐसी ही बात को लेकर हम आपके सामने आगे बढ़ रहे हैं। एक बहुत बड़ी बीमारी जरूरी नहीं है कि सभी का एक ही कारण है और भी कारण हो सकते हैं। लेकिन अगर किसी बीमारी के 100 कारण हैं या पचास कारण हैं तो उसमें से एक ये मुख्य कारण है। जो हमारे जीवन को पूरी तरह से नष्ट कर देता है। बीमारी का नाम है कैंसर और कैंसर एक आम रोग की तरह हो गया है आज इस समाज में। उसके कारण की तरफ हम आगे बढ़ते हैं।

जब बहुत सारे लोगों से मिलना होता है, बातचीत होती है, चर्चा होती है, अन्दर की गहराई की बात होती है तो उनसे बात करते करते बात सामने आती है कि बहुत समय तक जिसके साथ वो रहे हैं या आस-पास जिसके साथ वो रहे हैं, सबके साथ पूरी तरह से वो घुल-मिल नहीं पाये हैं। या घुल-मिले तो किसी न किसी लिहाज के कारण उनसे वो बातें नहीं शेयर कर पाये जो उनके अन्दर उसके प्रति विरोध की थी या उनके प्रति सम्मान की थी। या किसी ने उनको कुछ कह दिया उनको बुरा लगा लेकिन वो ये बात कह नहीं पाये कि मुझे ये बात अच्छी नहीं लगी। ऐसी बातें सबके सामने आईं। कटने का मतलब है कि बहुत समय का,

॥ शरीर की सुरक्षा- सोच से ॥

बहुत काल का रिजेंटमेंट की स्थिति। रिजेंटमेंट का मतलब होता है नाराजगी, कुद्वह्न, कड़वाहट की स्थिति, हमारे अन्दर एक गाँठ बनाती है। और उस गाँठ की वजह से हमारे अन्दर बहुत सारे सेल्फ और टीशयूज जन्म लेते हैं जो हमारे जीवन को बदल देते हैं। और ये एक दिन में नहीं होता, रोज होता है क्योंकि हर दिन वो व्यक्ति ऐसा

मैं आपसे क्यों कह रहा हूँ अगर हम सभी जीवन में सच में स्वस्थ रहना चाहते हैं तो किसी की भी ऐसी बात को लेकर आपको क्यों जीना चाहिए? आपका जीवन इम्पोर्टेंट (महत्वपूर्ण) है, आपका स्वास्थ्य है इम्पोर्टेंट है या आप या सामने वाला? तो सामने की इम्पोर्टेंस, सामने वाले का मूड, सामने वाले की स्थिति, सामने वाले का

बोलना शुरू कर दूँ, बताना शुरू कर दूँ, कहना शुरू कर दूँ तो 90 प्रतिशत निदान आपको मिल जायेगा। हम चाहे इसकी कितनी भी दवाई करते हैं, हम चाहे कितना भी इसके लिए बहुत कुछ खाते-पीते हैं, जब इसका इलाज शुरू होता है तो और ज्यादा वो बढ़ता चला जाता है। और बहुत कम आत्मायें हैं जो इससे निकल पाईं।

जखूर लोगों के अन्दर एक दहशत होती है कि जिसको भी ये चीज हुई है वो आज नहीं तो कल फिर से उभर कर सामने आ जायेगी। और वो चीज बढ़ती चली जायेगी। पूरी तरह से ठीक नहीं होते। ऐसी मान्यता भी है और होने के बाद जब ठीक होता है, ऑपरेशन होता है उसके बाद भी काफी समय तक उसकी देखभाल करनी पड़ती है। लेकिन आपके विचारों की देखभाल आप करें। आपने अन्दर कोई भी ऐसी बात किसी की ली है, किसी के प्रति है तो उसे शेयर करें और उन्हीं से करें जिनके लिए है। अब जब बार-बार आप उसे ये बात बोलेंगे तो अन्दर जितनी भी ऐसी बातें हैं वो निकल जायेगी। और जैसे-जैसे निकलेंगी वैसे-वैसे आपके सेल्स और टिश्यूज के अन्दर से भी वो धीरे-धीरे सारी एनर्जी डाउन हो जायेगी, निकल जायेगी। और जब वो निकल जायेगी, ब्रेन आउट हो जायेगी तो

बहुत समय का, बहुत काल का रिजेंटमेंट की स्थिति। रिजेंटमेंट का मतलब होता है नाराजगी, कुदहन, कड़वाहट की स्थिति, हमारे अन्दर एक गाँठ बनाती है। और उस गाँठ की वजह से हमारे अन्दर बहुत सारे सेल्स और टीश्यूज जन्म लेते हैं जो हमारे जीवन को बदल देते हैं।

व्यवहार आपसे कर रहा है, हर दिन आपके सामने ऐसी बातें आ रही हैं और वो हर दिन गाँठ बनती जा रही है। मैं सिर्फ अपनी बात उनसे नहीं रख पा रहा जिनके साथ मेरा जीवन चल रहा है या जिनसे भी आप बहुत नज़दीक हैं। तो उनसे खुलके आप वो बात नहीं कह पा रहे। मुझे इस बात से समस्या होती है, मुझे ये बातें कृपया न बोला करें जो आप बोल रहे हो। तो ये बात बार-बार

लिहाज करके आपने वो बातें नहीं की। लेकिन जो बाद में तकलीफें होती हैं ना उसको आप झेल नहीं सकते। उसको आप अपने ऊपर पूरी तरह से धारण नहीं कर सकते। तो ये लम्बे काल की प्रैक्टिस, लम्बे काल का अभ्यास, हमारे जीवन को बहुत तरह से बदल देता है। मतलब ये लम्बे काल का अभ्यास का मतलब यहाँ ये है कि अगर मैं बार-बार इन बातों को अभी भी

धीरे - धीरे
सेल्स और
टिश्यूज़ की
फिर से
मरम्मत हो
जायेगी।

इसके बड़े
सुन्दर
अनुभव हैं

इसलिए इस अनुभव को आपके सामने एक बात के रूप में, एक छोटी-सी शुभभावना के रूप में रखा जा रहा है कि अगर आपके अन्दर सबके लिए, ये कोई छोटी बात नहीं है, बहुत बड़ी बात है। जितने भी लोगों से आप मिलते-जुलते हैं, बातचीत करते हैं, जिसके लिए भी आपके अन्दर वो सब चीज़ें चल रही होती हैं उन्हीं से समस्या हमारे अन्दर आती है। बाकी और कोई फॉर्मल (औपचारिकता) रिलेशन से हमारे अन्दर कोई समस्या नहीं आती। जितने भी इनफॉर्मल (अनौपचारिक) लोग हैं, जिनके भी साथ आपका जीवन गुज़रा है, उन्हीं से, या जिसके भी साथ आपके बहुत अच्छे सम्बन्ध रहे हों, उन्हीं से वो बातें हुई, उन्हीं से ही हमें इस बीमारी का सामना करना पड़ रहा है। मैंने शुरू में ही बोला, हमने आपके सामने शुरू में ही ये बात रखी कि ज़रूरी नहीं है कि वही बातें आपको डिस्टर्ब करें और यही 100 प्रतिशत कारण है। और भी कोई कारण हो सकता है लेकिन ये भी उसमे से एक कारण है। अपनी बात को सबके सामने रखना बहुत ज़रूरी है।



» ब्र.कु. अनुज भाई,दिल्ली

उपलब्ध पुस्तकें

जो आपके जीवन को बदल दे



प्रश्न : मेरी शादी को तीन साल हो गये हैं। अभी मेरे पति की जॉब चली गई है। वो फिर से लगातार प्रयास कर रहे हैं, लेकिन उन्हें जॉब नहीं मिल रही। ससुराल में भी कुछ आर्थिक व पारिवारिक क्षति हुई है इसलिए मेरे आने के बाद से ऐसा हो रहा है ऐसा मेरे ससुराल वाले मानते हैं और मुझे कुलक्षणी कहते हैं। मैं अपने ऊपर लगे इस कलंक को धोना चाहती हूँ क्या करूँ?

उत्तर : समाज में ऐसी मान्यता है कि कभी-कभी अगर कोई नया व्यक्ति घर में आता है तो आनंद छा जाता है और कोई आत्मा ऐसी आ जाती है कि उसके आने से सारा खेल बिगड़ने लगता है। फिर समाज वाले भी कुछ-कुछ गलत शब्द भी यूज करने लग जाते हैं। लेकिन ये सब सुनने के लिए आपको तैयार भी रहना चाहिए। देखिए वैसे तो किसी भी परिवार पर विघ्न कोई एक व्यक्ति के कारण ही नहीं आता है, सभी वे कर्मों के खाते एकसाथ काम करते रहते हैं। आपके परिवार पर ये जो विघ्न आया है, ये सब ठीक करने के लिए 21 दिन योगाभ्यास करना है। राजयोग से पहले आप दो संकल्प सच्चे मन से करेंगे मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मैं विघ्नविनाशक हूँ। सात बार ये दोनों स्वमन एक घंटा शांति में बैठकर बिना किसी डिस्टर्बेंस कोई ट्यून बजा सकते हैं, गीत बजा सकते हैं, योग की कॉमेंट्री बजा सकते हैं लेकिन ये याद रखना है कि ये अभ्यास अमृतवेले योग के अतिरिक्त करना है। अमृतवेले योग अर्थात् आत्मा और परमात्मा का मिलन। अपने परमपिता से प्यार भरी मुलाकात करनी है। उससे शक्तियां लेनी हैं, वरदान लेने हैं। और अगर आपने राजयोग नहीं सीखा है तो राजयोग तो आपको सीखना ही होगा, तो ही आप कर पायेंगी। अगर आपके आस-पास कोई राजयोग सेवाकेन्द्र नहीं है तो आप ऑनलाइन भी सीख सकती हैं। क्योंकि एक राजयोग और आध्यात्मिकता मात्र ही इस संसार को इन सबसे बचाने में समर्थ होगी। इसके बिना संसार में अपने को सुरक्षित रखना, अपने को निरोग रखना, इन विघ्नों से मुक्त रखना इसका कोई उपाय बचेगा नहीं। ऐसे में आपको घबराना नहीं है, हिम्मत नहीं हारनी है। इस चैलेंज को स्वीकार कर लें और मन बना लें कि मेरे लिए जो सबका दृष्टिकोण है वो मैं समाप्त करके रहूँगी। मैं ये सबको करके दिखाऊँगी कि मैं कुलक्षणी नहीं हूँ, मैं लक्ष्मी हूँ। दृढ़ संकल्प कर लें कि मेरे घर में आते ही आनंद ही आनंद छा गया। परम शान्ति, सफलता का जैसे वरदान मिल गया। खुशहाली आ गई। और आप एक सवेरे थोड़ा जल्दी उठें, मन को उदासी से भरकर नहीं, खुली हवा में जरा देखो ऊपर कि ओर भगवान मेरा परमपिता है। उसने कितना सुन्दर संसार बनाया है। वो भाग्यविधाता है। मैं उस भाग्यविधाता की संतान हूँ। श्रेष्ठ भाग्य लेकर ही जन्मी हूँ। मैं बहुत भाग्यवान हूँ... मैं बहुत

भांग्यवान हूँ ऐसा सात बार करें। इससे आपका सोया हुआ भांग्य जग जायेगा। सोये हुए भांग्य को जगाने से सबकुछ अच्छा होने लगेगा। और सवेरे उठते ही ये भी संकल्प करें कि मेरे परिवार के लोग बहुत अच्छे हैं, हमारे साथ बहुत गुड टाइम चल रहा है। मेरा बैड टाइम समाप्त हो गया है। मैं इस घर में आई हूँ, एक सुन्दर समय मेरे साथ आया है। मुझे हर कदम पर सफलता मिलेगी। अब ये दुर्भाग्य के दिन पूरे हो जायेंगे और हमारे भांग्य का सितारा चमकेगा। बस इस तरह से संकल्प करें।

मन की बातें



- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य भाई

प्रश्न : मैं मुम्बई से सलोनो हूँ। मैं 12वीं कक्षा की छात्रा हूँ। जैसे-जैसे परीक्षा नज़दीक आती जा रही है, वैसे-वैसे मेरा भय बढ़ता जा रहा है। मैं जो भी याद करना चाह रही हूँ वो याद नहीं हो रहा है। मैं क्या करूँ?

उत्तर : दो चीजें हो गई, एक भय और दूसरी मेमोरी पॉवर वीक। दोनों ही विद्यार्थीयों के लिए बड़ी खतरनाक हैं। पहली चीज तो ये कि आपको अपना भय समाप्त करना होगा। तो उसके लिए आपको, सवेरे जब भी आँख खुले तभी अपने को याद दिलाएंगे कि मैं तो सर्वशक्तिवान की संतान हूँ। इसलिए मैं बहुत शक्तिशाली हूँ अर्थात् मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। दूसरा याद दिलाएंगे सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। मुझे हर फील्ड में सफलता मिलनी ही है। भगवान के बच्चों को यदि सफलता नहीं मिलेगी तो भला और किसको मिलेगी ! ऐसा चिंतन कर लें कि मेरे साथ तो स्वयं भगवान है, मुझे तो सफल होना ही है। मैं निर्भय हूँ। ये संकल्प रोज सवेरे उठकर सात-सात बार कर लिया करें। इससे आपका भय भी समाप्त होगा और एक निश्चितता आयेगी। कदम सफलता की ओर बढ़ेंगे, क्योंकि ये सब्कोन्शियस माइंड का प्रयोग है। सवेरे जब हम उठते हैं तो हमारा सब्कोन्शियस माइंड फुली एक्टिव होता है, और उसको जो संकल्प हम देंगे वो हमारे सब्कोन्शियस माइंड के लिए जैसे कमांड हो जाती है, आदेश हो जाता है। दूसरा आपको अपनी मेमोरी पॉवर बढ़ानी है। मेमोरी पॉवर को नष्ट करने वाली पहली चीज है भय, भय मनुष्य की मेमोरी पॉवर को एकदम नष्ट कर देता है। तो जैसे-जैसे आप निर्भय बनेंगी आपकी बुद्धि फिर से जागृत होगी। वो जागृत

होगी तो आपको सबकुछ याद रहेगा। और कम से कम आधा घंटा आपको राजयोग का अभ्यास रोज अवश्य करना चाहिए, ताकि आपका मन पीसफुल रहे। क्योंकि मन जितना शांत बुद्धि उतनी ही तीव्र। मेमोरी पॉवर उतनी ही शार्प। तो आपको अपने चित्त को शांत करने के लिए ये नहीं सोचना चाहिए कि टाइम सामने आ रहा है तो अब मैं आधा घंटा योग भी करूँ! आधा घंटा योग करने से आपको चार घंटे का फायदा हो जायेगा। जो याद करती हैं आप चार घंटे में वो आपको एक घंटे में याद होने लगेगा। इसलिए रोज आधे घंटे के साथ चित्त को शांत रखते हुए, योग को एन्जॉय करते हुए अभ्यास करना चाहिए। फिर अभ्यास में दूसरी प्रैक्टिस कर लेंगे। मैं आत्मा स्वराज्यधिकारी हूँ। स्वराज्यधिकारी का अर्थ होता है मैं आत्मा मन, बुद्धि, संस्कारों की, इस देह की मालिक हूँ। मैं भृकुटि में विराजमान हूँ। मैं अपनी राजा हूँ। फिर अपनी बुद्धि को आदेश दैंगे कि हे मेरी बुद्धि जो कुछ मैं पढ़ूँ तुम उन सबको याद कर लेना। जब एग्जाम हाथ में आये तो सब इमर्ज कर लेना। ये अभ्यास आपको रोज दो बार अवश्य कर लेना है। सवेरे और फिर तब, जब स्टडी चालू करें। और जब एग्जाम पेपर आपके हाथ में आये तो शांत होकर, धैर्य चित्त होकर मैं शांत हूँ, हे मेरी बुद्धि मैंने जो कुछ आज तक पढ़ा है वो तुम सब इमर्ज कर दो। तुम्हारे पास इन सभी प्रश्नों के उत्तर हैं। तो बुद्धि वैसा ही आदेश का पालन करेगी। जब ये प्रैक्टिस रोज करेंगे तो इससे आपका भय भी दूर होगा और सबकुछ याद रहेगा।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल



स्वार्थपूर्ण भावनायें ही सम्बन्धों में लाती है टकराव

वरिष्ठ

राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

वसुंधरा के प्रत्येक कोने से सम्बन्धों में बढ़ती हुई कड़वाहट की आवाज सुनाई देती है। मानव मन चीत्कार कर कह रहा है कि जिनके लिए मैंने जीवन भर इतना सबकुछ किया, उनका मुझसे ऐसा व्यवहार...असहनीय...निन्दनीय...। सम्बन्धों का सुख बाह्य रूप से तो दृष्टिगोचर होता है, किंतु अंदर झांककर देखने से विष और पीड़ा के ही दर्शन होते हैं। कोई किसी से खुश नहीं, कोई किसी से संतुष्ट नहीं, सदा ही दूसरों की शिकायतें, मनुष्य के मन को व्याकुल कर रही हैं।

पारस्परिक सम्बन्ध-जिनका प्रारंभ स्नेह रूपी बीज से ही होता है और जिनके बिना जीवन का कोई मूल्य ही नहीं रह जाता, क्यों बिगड़ गये? क्या गलती हो रही है? जबकि हम सभी जानते हैं कि जीवन में सभी को विविध सम्बन्धों में आना पड़ता है, विभिन्न संस्कारों के व्यक्तियों से व्यवहार करना होता है, जीवन कहीं भी अकेला नहीं है। जीवन के सुख व दुःख, हार व जीत भी दूसरों पर आश्रित हैं। और यदि सम्बन्धों में कड़वाहट भर गई तो जीवन का सुख छिन जाता है, जीवन की शांति भस्म हो जाती है और मनुष्य प्रेम की प्यास में, प्यासी दृष्टि से चहुं ओर निहारने लगता है।

तो सम्बन्ध की शुरुआत प्रेम है, इसका मध्य जहाँ-तहाँ कड़वाहट से भरा है और अंत...? अंत लम्बे मध्यकाल पर आधारित रहता है। ज्यों-ज्यों मनुष्य सम्बन्धों को आगे बढ़ाता है, कुछ विकृतियां प्रवेश करके उन्हें जहरीला बनाने लगती हैं। हमें उनका एहसास होना चाहिए और सहज ही उन दीवारों को लांघ जाना चाहिए। तो प्रस्तुत है कुछ मूल कारण व निवारण सम्बन्ध बिगाड़ने वाला हमारा प्रथम शत्रु है- स्वार्थ...। जहाँ स्वार्थपूर्ण भावनाएं प्रबल हुई और सब कुछ मटियामेट। स्वार्थ पूर्ति न होने पर मनुष्य आपसी स्नेह, नाते, पूर्वकाल के उपकार आदि सब कुछ भूल जाता है। स्वार्थी मनुष्य कितना निर्दयी बन जाता है- यह आज चारों ओर प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। माँ और बेटे का कितना निर्मल सम्बन्ध है। वह बेटा जिसकी माँ ने सच्चे दिल से पालना की थी, जरा-सी स्वार्थ पूर्ति न होने पर माँ को छोड़कर चला जाता है। पति, पत्नी का सम्बन्ध कितना सुखद है, परंतु दहेज की स्वार्थ

पूर्ति के अभाव में पत्नियों को जिंदा ही अग्नि के सुपुर्द कर दिया जाता है। कितना भयावह है यह स्वार्थ! इसकी सत्य कहानियों के तो ग्रंथ लिखे जा सकते हैं। जो आज अपने हैं, वही कल पराए हो जाते हैं।

अतः सम्बन्धों को सतत मधुर बनाए रखने के लिए स्वार्थ का त्याग करना होगा, स्वयं से पूछना होगा कि स्वार्थ बड़ा या सम्बन्ध? धन बड़ा या स्नेह, पदार्थ बड़े या आशीर्वाद का हाथ बड़ा? परंतु जो ज्ञान विहीन पशु-तुल्य मनुष्य धन और पदार्थों को ही जीवन का आधार मानते हैं वे स्वप्न में भी सच्चे सुखों की अनुभूति नहीं कर पाते। सम्बन्धों के अमृत में जहर घोलने वाला दूसरा सूक्ष्म शत्रु है- मनुष्य का स्वयं का ही जहरीला स्वभाव, अहंकारी भाव, चिड़चिड़ापन अथवा स्वयं का कटु

जहाँ
स्वार्थपूर्ण भावनाएं प्रबल हुई और
सब कुछ मटियामेट। स्वार्थ पूर्ति न होने
पर मनुष्य आपसी स्नेह, नाते, पूर्वकाल
के उपकार आदि सब कुछ भूल जाता है।
स्वार्थी मनुष्य कितना निर्दयी बन जाता
है- यह आज चारों ओर प्रत्यक्ष देखा जा
सकता है।

स्वभाव ही मनुष्य को सबसे ज़्यादा परेशान करता है। हम एक ऐसी नारी को जानते हैं जो सदा ही दूसरों पर दोषारोपण करती है कि ये-ये लोग मुझे बहुत तंग करते हैं परंतु जब तक उसे यह एहसास न हो जाए कि परेशान वह अपने स्वभाव के कारण ही है, उसकी परेशानी दूर नहीं होगी। उस देवी का नाम है सुखदेवी। परंतु उसका अनुभव व काम वैसा नहीं है। न वह किसी को सुख देती और इसलिए न उसे सुख मिलता। तो स्वभाव को मृदुल व सरल बनाओ। मीठे स्वभाव से दूसरों के दिलों पर राज्य करो। परंतु यदि तुम ऐसा नहीं करते तो सम्बन्धों में बिगाड़ का फल भुगतने के लिए तैयार रहो, फिर यह शिकायत न करो कि देखो आज की नई पीढ़ी कितनी बिगड़ गई... सबकी राह अपनी बन गई है। तुम भी सम्बन्धों का सुख ले सकते हो।

दूसरों से कामनाएं रखना भी सम्बन्ध बिगाड़ना है। एक माँ सदा ही अपने बड़े बच्चों से अनेक कामनाएं रखती है, अपनी बहुओं से उसकी अनेक कामनाएं रहती हैं। वे उसकी सेवा करें, वे उसके

लिए सुख-सुविधा के सामान जुटाएं। क्योंकि वह स्वयं को इनकी अधिकारी मानती है। वह प्रायः कहा करती है कि हमने बच्चों को पाला-पोसा, बड़ा किया, पढ़ाया, क्या अब बच्चों का कर्तव्य हमारी सेवा करना नहीं है! वह कब से आह्वान करती थी कि घर में बहु आयेगी, मेरे पैर दबाया करेगी। परंतु बहु आती है आधुनिक, वह स्वयं कामना करती है कि सास मेरी सेवा करे। बच्चे अपने काम में व्यस्त हैं और माँ की कामनापूर्ति न होने से माँ कुदृती रहती है, सदा अपने भाग्य को कोसती रहती है। हमारे मन की कामनाओं से दूसरों की भावनाएं बदलती हैं। हमारी कामनाएं हमें कमजोर करती हैं। माँ की कामनाएं ही बच्चों को उनसे दूर करती हैं। परंतु यदि बूढ़ी माँ का विवेक यह सोचने लगे कि मैंने तो बच्चों के लिए अपना कर्तव्य पूर्ण किया है, न कि एहसान। अब मैं स्वयं ही स्वयं की सेवा करूंगी। तो उसका अथकपन, अनासक्त व स्वार्थ रहित भाव बच्चों में भी सेवाभाव पैदा करेगा, बहू में भी निर्माण भाव पैदा करेगा और सम्बन्ध मधुर हो जाएंगे।

पारस्परिक सम्बन्धों को स्नेहपूर्ण रखने के लिए कुछ छोटी-छोटी परंतु अत्यंत महत्वपूर्ण बातों पर भी ध्यान रखना परमावश्यक है। कभी-कभी हम दूसरों की किसी भीती हुई गलत बात को बार-बार उछालते रहते हैं। बार-बार उस बात को बीच में लाकर मजा किरकिरा करते रहते हैं कि हाँ मैं जानता हूँ तुमने तब क्या किया था, मुझे समय पर मदद नहीं की थी, मुझे अमुक समय धोखा दिया था। परंतु यदि दूसरा स्वयं को सुधार भी चुका हो, तो भी हम उसकी वही पुरानी बात चित्त में धारण किये रहते हैं और उसे उसी दृष्टि से देखते हैं। यह गलत है। इसी प्रकार किसी के किसी विशेष अवगुण को चित्त में धरकर हम उससे वैसा ही व्यवहार बनाए रखते हैं। मंदिर में जाकर तो हम मुक्त कंठ से गा लेते हैं- हे प्रभु मोरे अवगुण चित्त न धरो, परंतु दूसरों के अवगुण चित्त पर धरने में हम जरा भी नहीं हिचकते। हमने देखा- एक परिवार में माँ क्रोधी स्वभाव की थी। उसके दो बेटे, दो बेटियाँ, बार-बार उसे यही कहते थे- माँ, तुम बड़ा क्रोध करती हो। यह सुनकर माँ का क्रोध बढ़ता था- वह कहती थी मुझे शिक्षा देते हो... परिणाम यह था कि घर में सदा मनमुटाव, सदा अशांति।

तो कई जगह हमें दूसरों के अवगुणों को गणन्य समझना चाहिए, उनको बार-बार याद दिलाना नहीं चाहिए। उनके अवगुणों को महत्व नहीं देना चाहिए, तब हमारे सम्बन्धों में मिठास कायम रहेगी।



ओझर-म.प्र. जिला कलेक्टर शिवराज सिंह वर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रेणुका बहन।



गंज बासौदा-म.प्र. 'राष्ट्रीय पत्रकारिता दिवस' पर आयोजित कार्यक्रम में पत्रकार सत्यनारायण शर्मा ब्यूरो चीफ नवदुनिया, सुरेश कुमार तलवानी रचिर टाइम्स, ओम प्रकाश चौरसिया स्टार समाचार आदि को ईश्वरीय सौगात भेंट कर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. रेखा बहन व ब्र.कु. रुकमणी बहन।



जबलपुर-नेपिथर टाउन(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज के शिव स्मृति भवन में आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत 'गीता ज्ञान एवं जीवन मूल्य' विषय पर आयोजित व्याख्यान में मुख्य वक्ता डॉ.पुष्पा पांडेय, डॉ.श्याम, डॉ.शिव कुमार पांडेय, अभय जैन, ब्र.कु.भावना बहन, ब्र.कु.वर्षा बहन, पवन पांडेय आदि उपस्थित रहे।



जबलपुर-कटंगा कॉलोनी(म.प्र.)। शिक्षा दिवस के अवसर पर शिक्षाविदों का संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह में 'शिक्षा में मूल्यों का महत्व' विषय पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. विमला दीदी। मंचासीन हैं आर.के. स्वर्णकार,संभागीय शिक्षा अधिकारी, सुधीर उपाध्याय,ब्लॉक एजुकेशन ऑफिसर, ममता आनंद,प्रो.ट्रिपल आई.टी., ब्र.कु. विमला दीदी तथा ब्र.कु. विनीता।



मुम्बई-मलाड(दिंडोशी)। दीपावली के शुभ अवसर पर सेवाकेन्द्र में आने पर नृत्यांगना सुधा चंद्रन तथा रवि जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शोभा बहन।



राजनांदगांव-छ.ग.। रानी लक्ष्मीबाई की जयंती के अवसर पर ब्र.कु. पुष्पा बहन को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित करते हुए रानी लक्ष्मीबाई शासकीय विद्यालय के प्राचार्य चैतराम वर्मा। साथ हैं महापौर हेमा देशमुख एवं ब्र.कु.पूनम बहन।



अम्बिकापुर-चोपड़ापारा(छ.ग.)। ब्रह्माकुमारीज के नव विश्व भवन में 'चमत्कार मेरे विचारों का' विषय पर आयोजित बाल दिवस के कार्यक्रम में चिराग सोशल वेलफेयर सोसायटी के डायरेक्टर मंगल पाण्डे, डॉ.अरविन्द गुप्ता, जिला परियोजना अधिकारी साक्षरता प्राचार्य लायवलीहुड कॉलेज गिरिशी गुप्ता, वसुधा महिला मंच संयोजिका वंदना दत्ता, गायत्री परिवार सदस्य अमृता जायसवाल, सुनिधि शुक्ला, सरगुजा संभाग की सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या दीदी, ब्र.कु. ममता बहन, ब्र.कु. पूजा बहन, ब्र.कु. प्रतिमा बहन, ब्र.कु. अर्चिता बहन आदि उपस्थित रहे।



छतरपुर-विश्वनाथ कॉलोनी(म.प्र.)। पुलिस लाइन स्थित कॉन्फ्रेंस हॉल में पदस्थ आरक्षक से पदोन्नत प्रधान आरक्षकों के जिला स्तर पर चल रहे छह दिवसीय इंडक्यूशन कोर्स के दौरान पुलिस स्टाफ को दो दिवसीय 'स्ट्रेस एंड इमोशनल मैनेजमेंट एवं खुशनुमा जीवन' का प्रशिक्षण देने हेतु ब्रह्माकुमारीज को आमंत्रित किया गया। इस मौके पर स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रमा बहन एवं ब्र.कु. कल्पना बहन द्वारा सम्बोधित किया गया तथा ब्र.कु. भारती बहन द्वारा राजयोग मेंडिटेशन का अभ्यास कराया गया। कार्यक्रम में 50 प्रधान आरक्षकों ने भाग लिया।



भिलाई-छ.ग.। नारी शक्ति सम्मान एवं देशभक्ति पर आयोजित चैतन्य देवियों की झाँकी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए स्टील सिटी प्रेस क्लब के वरिष्ठ पत्रकार शिव श्रीवास्तव, ब्र.कु. आशा बहन, आज का अर्जुन के संपादक रामाराव तथा दैनिक श्रमबिंदु के पत्रकार शमशुद्दीन।



सांरगपुर-म.प्र.। दया एवं करुणा के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण के अंतर्गत 'आओ मिलकर करें दैवीय संस्कृति की स्थापना' थीम पर आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम में एस.डी.एम. राकेश मोहन त्रिपाठी, एस.डी.ओ.पी. जॉयस दास, पूर्व विधायक गौतम टेटवाल, पूर्व विधायक कृष्णमोहन मालवीय, नगरपालिका उपाध्यक्ष व लॉयस क्लब जोन चेयरपर्सन निलेश वर्मा, वरिष्ठ समाजसेवी मांगीलाल सोलंकी, राजगढ़ से संस्थान की जिला प्रभारी ब्र.कु. मधु बहन, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. भाग्य लक्ष्मी बहन, ब्र.कु. नीरज भाई, पार्षद जन, पत्रकार बंधु, पर्यावरण प्रेमी दल, महादेव मित्र मंडल, साई सेवा समिति, पेंसनर संघ समेत कई समाजसेवी संगठनों के सदस्य उपस्थित रहे।

जर्नलिस्ट्स यूनियन ऑफ मध्यप्रदेश द्वारा दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन

प्रकाशन में राष्ट्रीय हितों का ध्यान रखें पत्रकार : विजयवर्गीय

“पत्रकारों के एडवोकेट जनरल बनेंगे कैलाश विजयवर्गीय

“ब्रह्माकुमारीज सहस्रबाहु नगर के सहयोग से हुआ आयोजन

“कैलाश विजयवर्गीय ने किया ब्रह्माकुमारीज का सम्मान

होटल कैलाश में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन को सम्बोधित करते हुए कहा। उन्होंने पत्रकारों का आह्वान करते हुए कहा कि वे समाचार संकलन एवं प्रकाशन में राष्ट्रीय हितों का ध्यान रखें। और पत्रकारों के हितों की रक्षा के लिए वह स्वयं उनके पैरोकार (महाधिवक्ता) बनेंगे। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के

बाद में एनयूजेआई के आम परिषद की बैठक में एक प्रस्ताव पारित किया गया जिसमें मुख्य धारा के मीडिया को सोशल मीडिया से विस्थापित करने की कोशिश का विरोध किया गया तथा मुख्य धारा की मीडिया खास कर संवाद समितियों को सशक्त बनाने की मांग की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता एनयूजेआई के



भोपाल-म.प्र.। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव कैलाश विजयवर्गीय ने कहा कि पत्रकारिता के नाम पर अनैतिक आचरण करने वाले कुछ लोगों ने आगे का स्थान हथिया लिया है और केवल 'कलम एवं खबर' से मतलब वाला पत्रकार हाशिये पर अकेला पड़ा है। विजयवर्गीय ने यह बात नेशनल यूनियन ऑफ जर्नलिस्ट्स (इंडिया) के तत्वाधान एवं ब्रह्माकुमारीज के सहयोग से जर्नलिस्ट्स यूनियन ऑफ मध्यप्रदेश द्वारा

रूप में उपस्थित राज्यसभा सांसद अजय प्रताप सिंह ने कहा कि सोशल मीडिया के दौर में हर कोई पत्रकार बनने का दावा करने लगा है। इसलिए समय की मांग है कि पत्रकार की परिभाषा तय होनी चाहिए और इसके बाद सुरक्षा एवं सुविधाओं की मांग को उठाया जाए। एनयूजेआई के महासचिव प्रसन्न मोहंती ने पत्रकारों के रेलवे टिकट की रियायत बहाल करने तथा राज्यों में पत्रकार अधिमन्यता समितियों का पुनर्गठन करने की मांग की।

अध्यक्ष रास बिहारी ने की और संचालन उपाध्यक्ष प्रदीप तिवारी ने किया। ब्रह्माकुमारीज के स्थानीय सेवाकेंद्र प्रभारी ब्र.कु. डॉ. रीना दीदी ने दूसरे दिन के कार्यक्रम का संचालन करते हुए सभी अतिथियों का स्वागत एवं सम्मान किया। साथ ही संस्थान की ओर से सुंदर सांस्कृतिक प्रस्तुति भी दी गई। कार्यक्रम में कैलाश विजयवर्गीय के द्वारा ब्र.कु. रावेन्द्र एवं ब्र.कु. हेमराज सूर्यवंशी को स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया।

एक ईश्वर, एक परिवार और एक धर्म का संदेश दे रहा ये संस्थान : राज्यपाल

‘दया एवं करुणा के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण’ थीम के तहत आयोजन



मुम्बई-मुलुंड। ब्रह्माकुमारीज के ‘दया एवं करुणा के द्वारा सामाजिक तथा आध्यात्मिक सशक्तिकरण’ विषय पर आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में बाल दिवस के अवसर पर दयानंद स्कूल ग्राउंड, चन्दन बाग मुलुंड मुंबई में आयोजित सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज ने अमृत महोत्सव परियोजना की अपेक्षा और उद्देश्य को पूरा किया है क्योंकि इन लोगों ने सभी जाति, पंथ, धर्म, क्षेत्र की प्रत्येक आत्मा को

क्षमता को मजबूत करता है। संस्थान के कार्यकारी सचिव ब्र.कु.मृत्युंजय भाई ने बताया कि किस तरह कुशल सम्बंध-संपर्क में और खुशहाल जीवन के लिए दया और करुणा आवश्यक है और किस तरह श्रेष्ठ समाज का निर्माण कर सकते हैं। मुलुंड सबजोन की प्रभारी राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. गोदावरी दीदी ने कहा कि मनुष्य का सम्बंध दया और करुणा

कार्यक्रम में... राज्यपाल ने ब्रह्माकुमारीज मुलुंड सबजोन द्वारा बनाये गये सोविनियर का किया विमोचन और 2022-23 साल के शैक्षणिक, खेल कला तथा संस्कृति में उत्कृष्ट योगदान के लिए विशेष विद्यार्थियों को दिया प्रमाणपत्र।

आदि मूल्यों पर आधारित है। जब तक हर मनुष्य स्वयं की आध्यात्मिक प्रगति नहीं करेगा तब तक हमारा विश्व इन खूबसूरत

आध्यात्मिक प्रवचनों के माध्यम से सशक्त बनाने की कोशिश की है। इन्होंने समाज के हर क्षेत्र को महत्व दिया है और एक ईश्वर, एक परिवार और एक धर्म के संदेश को समाज के सभी कोनों में फैलाया है। राज्यपाल ने कहा कि इस संस्थान के लोगों के दयालु स्वभाव के कारण विश्व परिवर्तन का कार्य किया जा रहा है और हम आशा करते हैं कि मनुष्य अपनी मानसिक कमजोरियों को समाप्त करे और पवित्र स्पंदनों को प्रसारित करना सीखकर सभी को लाभ दे। राजयोग ध्यान उस

भावनाओं से सम्पन्न नहीं बन सकता। ब्र.कु. लाजवंती दीदी ने शब्दों से सभी का स्वागत किया। मंच संचालन ब्र.कु. सचिन उपाध्याय ने किया। इस अवसर पर संदीप सांगवे, डेप्युटी डायरेक्टर, एजुकेशन डिपार्टमेंट, मुंबई, मिहिर कोतेचा, मिनिस्टर, लेजिस्लेटिव असेम्बली, नानजी खिमजी भाई ठक्कर थानावाला, समाज रत्न व राजन अनुम, उद्योगपति ने भी अपने विचार रखे। अंत में डॉ. राजकुमार कोल्हे, फाउण्डर एंड प्रिंसिपल, जन, गण, मन स्कूल ने सभी का धन्यवाद किया।

तनाव से बचने के लिए सदैव खुश रहना सीखें : डॉ. नलगे

शांति सरोवर में ‘कर लो स्वास्थ्य मुट्ठी’ में कार्यक्रम

रायपुर-छ.ग.। मुम्बई के हेल्थ काउंसलर डॉ. दिलीप नलगे ने कहा कि सदैव खुश रहने के

में खुश रहना सीखें और मेडिटेशन के माध्यम से अपनी आंतरिक क्षमता को बढ़ाएं। उन्होंने आगे बताया कि हमारा मन चार चीजों से मिलकर बना है- विचार, भावनाएं, दृष्टिकोण



लिए अपने दृष्टिकोण को सकारात्मक बनाएं तथा यह सोचें कि जो हो रहा है वह कल्याणकारी है। उन्होंने कहा कि तनाव को पूरी तरह खत्म करना संभव नहीं है किन्तु तनाव प्रबंधन के द्वारा तनाव को कम करके इसके दुष्प्रभाव से बचा जा सकता है। डॉ. नलगे ब्रह्माकुमारीज द्वारा शांति सरोवर में आयोजित

और स्मृति (यादें)। मन और शरीर के बीच गहरा अंतर्सम्बंध है। इसीलिए मन के विचारों के साथ-साथ जीवन की विभिन्न परिस्थितियों, घटनाओं, व्यक्ति और वस्तुओं के प्रति हमारा दृष्टिकोण तथा पुरानी यादें हमारे

डॉ. दिलीप नलगे ने बताया तनाव से मुक्त रहने और हर परिस्थिति में खुश रहने का तरीका

‘कर लो स्वास्थ्य मुट्ठी’ में कार्यक्रम के दूसरे दिन ‘तनाव प्रबंधन कला’ विषय पर बोल रहे थे। उन्होंने तनाव को खत्म करने का सबसे बढ़िया इलाज राजयोग मेडिटेशन को बताते हुए कहा कि इससे आत्मा को पूरा आराम मिलता है। इसलिए तनाव से बचने के लिए हर परिस्थिति

स्वास्थ्य को सीध प्रभावित करती हैं। मन में विचार उत्पन्न होने पर हाइपोथैलेमस जो कि मस्तिष्क का मुख्य भाग है, से रसायन निकलने लगते हैं। इन्हीं रसायनों के माध्यम से हाइपोथैलेमस द्वारा संकल्पों की सूचना बहुत ही तीव्र गति से शरीर के विभिन्न अंगों में संचारित होती है। इस प्रकार मन और शरीर के बीच हाइपोथैलेमस संचार माध्यम की तरह काम करता है।

नवनिर्मित भवन ‘आनंद सरोवर’ का भव्य उद्घाटन

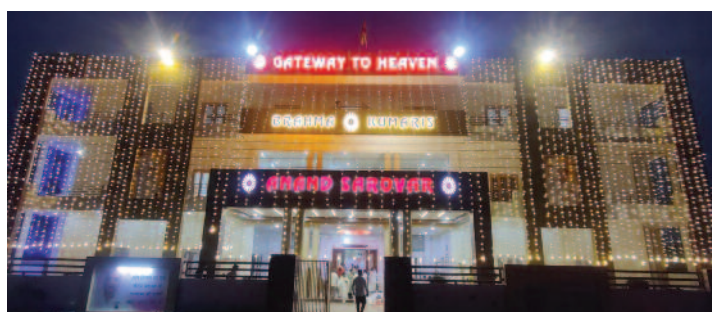
हर्षोल्लास के साथ मनाया गया सिरसा में ईश्वरीय सेवाओं का स्वर्ण जयंती समारोह

सिरसा-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज के नवनिर्मित भवन ‘आनंद सरोवर’ के उद्घाटन कार्यक्रम में संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका एवं यूरोपियन डायरेक्टर राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी मुख्य रूप से उपस्थित रहीं। उनके साथ ही संस्थान के कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय भाई, नॉर्थ जोन इंचार्ज राजयोगिनी ब्र.कु. प्रेम दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. उत्तरा दीदी, बठिण्डा सबजोन इंचार्ज राजयोगिनी ब्र.कु. कैलाश दीदी, माउण्ट आबू से ब्र.कु. हंसा दीदी, हांसी से ब्र.कु. लक्ष्मी दीदी, जौद से ब्र.कु. विजय दीदी व ब्र.कु. विजय भाई, फतेहाबाद से ब्र.कु. मदन भाई, करनाल से ब्र.कु. किरन दीदी, मधुबन से ब्र.कु. विवेक भाई, ब्र.कु. करण भाई, बुडलाडा से ब्र.कु. रजिन्द्र दीदी, कालावाली से ब्र.कु. संतोष दीदी सहित अनेक वरिष्ठ पदाधिकारियों ने भी इस विशाल समारोह में अपनी उपस्थिति से वातावरण में एक नई ऊर्जा का संचार किया।



आनंद सरोवर के विशाल सभागार में आयोजित उद्घाटन समारोह में सभी भाई-बहनों ने अपनी शुभकामनाएं दी व केक काट कर खुशियां मनाईं।

स्वर्ण जयंती समारोह का भी हुआ आयोजन सिरसा में ब्रह्माकुमारीज संस्थान की आध्यात्मिक सेवाओं का आगाज सन् 1969 में शहर के एक



शिवध्वज फहराकर तथा शिलापट्ट का अनावरण कर नये भवन का हुआ उद्घाटन

परिसर में बने पिरामिड, बाबा की झोपड़ी, विशाल किचन, विशेष ध्यान कक्ष (बाबा रूम) का भी राजयोगिनी जयंती दीदी सहित सभी वरिष्ठ अधिकारियों ने किया शुभारम्भ

छोटे से स्थान से हुआ। इन ईश्वरीय सेवाओं के 53 वर्ष पूरे होने पर भव्य स्वर्ण जयंती समारोह का अयोजन किया गया। स्वर्ण जयंती समारोह में शहर के विशिष्ट पत्रकार, राजनैतिक नेता, डॉक्टर, एडवोकेट, शिक्षाविदों सहित अनेकों गणमान्य हस्तियों ने शामिल होकर लाभ लिया।